सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सह्याद्रि

41 वाँ अंक, वर्ष 2026

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, (केंद्रीय)
मुंबई – 400051





गृह पत्रिका सह्याद्रि के 40वें अंक का विमोचन



राजभाषा शील्ड-2025 विजेता – प्रशिक्षण अनुभाग



वर्ष 2026

अंक 41 वाँ

सत्यमेव जयते

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, (केंद्रीय)

सी - 25, ऑडिट भवन, बांद्रा-कुर्ला संकुल, बांद्रा पूर्व, मुंबई 400051

मुखपृष्ठ

धोम बांध महाराष्ट्र के सतारा जिले में वाई के पास पवित्र कृष्णा नदी पर बना है, जो इस क्षेत्र की जीवनरेखा मानी जाती है। चित्र में दिखने वाली पर्वत श्रृंखलाएं सह्याद्रि (पश्चिमी घाट) का हिस्सा हैं तथा इस जलाशय को एक प्राकृतिक दीवार की तरह घेरे हुए हैं। धोम बांध का निर्माण 1982 में सिंचाई और जलविद्युत उत्पादन के उद्देश्य से किया गया था। यह आज एक प्रमुख पर्यटन स्थल भी है। इस बांध के आसपास के पहाड़ों पर प्रसिद्ध 'पांडवगढ़ किला' स्थित है, जो इस दृश्य को ऐतिहासिक महत्व भी देता है। यह स्थान अपनी शांत झीलों और नौका विहार के लिए प्रसिद्ध है।

सह्याद्रि परिवार

प्रकाशन

सह्याद्रि (हिंदी पत्रिका 41 वाँ अंक)



प्रधान संरक्षक

सुश्री आस्था लूथरा

प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (कें.), मुंबई



संरक्षक

श्री देवेन्द्र

निदेशक

प्रकाशक

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) मुंबई – 400051



संपादक

सुश्री स्वप्ना पिन्हेरो

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



संपादक

सुश्री सुमित एस.

सहायक निदेशक (राजभाषा)

संपादक मंडल



श्रीमती प्रिया मिश्रा

वरिष्ठ अनुवादक



सुश्री बिना कुमारी राय

कनिष्ठ अनुवादक



श्री रोहित साह

कनिष्ठ अनुवादक



श्री शशांक तिवारी

कनिष्ठ अनुवादक

अनुक्रमणिका

क्र.स.	शीर्षक	रचनाकार	पृ.स.
1	सह्याद्रि 40वें अंक का विमोचन तथा राजभाषा शील्ड-2025		2
2	मुख पृष्ठ		3
3	सह्याद्रि परिवार		4
4	अनुक्रमणिका		5
5	गृह मंत्री का संदेश		6-7
6	प्रधान संरक्षक की कलम से		8
7	संरक्षक की कलम से		9
8	संपादकीय		10
9	आपके पत्र		11-12
10	स्त्री एक सम्मानित मानव: समाज की सोच में परिवर्तन की आवश्यकता	श्री मिथिलेश कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकरी	13-14
11	बीरबल - एक लघु शोध	श्री भरत कुमार सोनी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकरी	15-17
12	कर्तव्यों के उपरांत अधिकार	श्री आशुतोष 'अनिल' विश्नोई, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	17
13	AI वाला कोर्स और हम	श्री मिथिलेश कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकरी	18
14	अंडमान की यात्रा	श्री आई.वी.एस. श्रीनिवास, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	19
15	हीरे की शक्ल	श्री आशुतोष 'अनिल' विश्नोई, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	20
16	मेरा निश्चय !	श्री कुमार सौरभ, लेखापरीक्षक	20
17	हिंदी पखवाड़ा 2025 की झलकियाँ		21-30
18	आज का भारत	श्री हेमन्त चन्द, डाटा एंट्री ऑपरेटर	30
19	मुंबई – कुछ अनजाने तथ्य	श्री राकेश कुमार सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	31-32
20	कोलकाता: सिटी ऑफ जॉय	सुश्री रिम्पा मुखर्जी, सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी	33
21	मेरे प्रेरणास्रोत : मेरे पिताजी	श्री कुमार सौरभ, लेखापरीक्षक	34-35
22	मेरी माँ	सुश्री ट्यूलिप सिंह, पुत्री सुश्री मधु सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	36
23	'स्त्री का फर्ज है'	सुश्री बिना कुमारी राय, कनिष्ठ अनुवादक	36
24	बजट 2026, मुझे क्या मिला?	श्री हेमन्त चन्द, डाटा एंट्री ऑपरेटर	37-39
25	ट्रेड यूनियन / कर्मचारी यूनियन	श्री राकेश कुमार सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	40-43
26	रातों का सुकून	श्री राकेश रौशन, लेखापरीक्षक	44
27	पढ़ना क्यों हैं जरुरी !	श्री राकेश रौशन, लेखापरीक्षक	44
28	सीतामढ़ी : माँ सीता की जन्मभूमि	श्री रोहित साह, कनिष्ठ अनुवादक	45-46
29	स्वामी जी	श्री शशांक तिवारी, कनिष्ठ अनुवादक	47-48
30	हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ		49
31	राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की झलकियाँ		50
32	सेवा निवृत्तियाँ		50
33	अखिल भारतीय सिविल सेवा फुटबॉल टूर्नामेंट		51

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते



प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्‌भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

प्रधान संरक्षक की कलम से



भारत विविधताओं का देश है। किसी भी देश की भाषा, उस देश की सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विरासत के साथ उसकी जान परंपरा को आगे ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह हमारे लिए हर्ष और गर्व की बात है कि हमारे देश में अनेक समृद्ध भाषाओं का सौहार्दपूर्ण सह-अस्तित्व है। हिंदी भारत की राजभाषा और संपर्क भाषा है। हिंदी एक जीवंत और गतिशील भाषा है। इसकी सरलता, सहजता और समावेशिता ने इसके व्यापक उपयोग को बढ़ावा दिया है।

कार्यालयीन हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" के 41 वें अंक के विमोचन पर मुझे बेहद हर्ष की अनुभूति हो रही है। कार्यालय गृह पत्रिका कार्यालय की प्रतिबिंब होती है। भारत के लगभग हर राज्य से आए पदधारियों ने कार्यालयीन कार्य के बीच समय निकाल कर विविध विषयों पर गृह पत्रिका सह्याद्रि में अपनी रचनाएं देकर अपनी साहित्यिक सृजनशीलता एवं रचनात्मक प्रवृत्ति का परिचय दिया है।

मुझे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि कार्यालय के सभी पदधारी कार्यालयीन कार्य में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग प्रतिबद्धता, समर्पण, तथा कर्त्तव्य की भावना रखते हुए करेंगे और अपने संवैधानिक उत्तरदायित्व का निर्वहन करेंगे ।

"सह्याद्रि" के 41वें अंक के सफल संपादन हेतु, मैं संपादक मंडल और सभी लेखकों को हार्दिक बधाई देती हूँ।

पत्रिका के उज्जवलतम भविष्य की अनेक शुभकामनाएँ।

आस्था लूथरा

आस्था लूथरा

प्रधान निदेशक

संरक्षक की कलम से



कार्यालयीन पत्रिका 'सहयाद्रि के 41वें अंक पाठकवृंद के समक्ष प्रस्तुत है। भारत देश भाषायी दृष्टि से एक समृद्ध राष्ट्र है। भाषा एक ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना है, जो ऐतिहासिक रूप से समाज और संस्कृति में होने वाले परिवर्तों के साथ-साथ बदलती रहती है। हिंदी अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, भाषिक विविधता और सामाजिक जुड़ाव के कारण न केवल देश में, बल्कि वैश्विक मंच पर भी एक विशिष्ट स्थान रखती है। हिंदी ने देश की विविधता में एकता स्थापित करने, सामाजिक समरसता को सुदृढ़ करने और राष्ट्रीय चेतना को प्रबल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

"सह्याद्रि" पत्रिका कार्यालय में कार्यरत पदधारियों की रचनात्मकता को प्रदर्शित करती है। "सह्याद्रि" का 41वाँ अंक रचनाकारों की हिंदी के प्रति आदर, गौरव, समर्पण, कर्तव्य तथा प्रतिबद्धता की भावना को दर्शाता है।

इस अवसर पर मैं कार्यालय के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों तथा सभी भाषा प्रेमियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। सहयादि की यह यात्रा अपने गौरवशाली अतीत से प्रेरणा लेते हुए उज्जवल भविष्य की ओर सतत गतिशील रहे, यही मेरी मंगलकामना है।

देवेन्द्र

देवेन्द्र

निदेशक

संपादकीय

प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) मुंबई द्वारा प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिका 'सह्याद्रि' केवल एक कार्यालयीन पत्रिका भर नहीं है, बल्कि यह हिंदी भाषा के प्रति समर्पण और प्रतिबद्धता का जीवंत प्रतीक है। यह पत्रिका न केवल राजभाषा नीति के क्रियान्वयन को सुदृढ़ करती है, बल्कि कार्यालय के अधिकारियों और कर्मचारियों के हृदय में हिंदी के प्रति निहित प्रेम और लगाव का सशक्त प्रमाण भी प्रस्तुत करती है।

'सह्याद्रि' अपने नाम के अनुरूप दृढ़ता, स्थिरता और ऊँचाई का संदेश देती है। जिस प्रकार सह्याद्रि पर्वतमाला अपनी भव्यता और व्यापकता के लिए जानी जाती है, उसी प्रकार यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार के क्षेत्र में निरंतर उन्नति के पथ पर अग्रसर है। इसके माध्यम से कर्मचारियों को अपनी रचनात्मक प्रतिभा अभिव्यक्त करने का अवसर मिलता है, जिससे कार्यालयीन वातावरण में साहित्यिक चेतना और भाषायी समृद्धि का विकास होता है।

इस पत्रिका में प्रकाशित लेख, कविताएँ, संस्मरण, तकनीकी आलेख तथा राजभाषा संबंधी सामग्री न केवल ज्ञानवर्धक होती है, बल्कि प्रेरणादायक भी सिद्ध होती है। यह मंच कर्मचारियों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करता है और उनके आत्मविश्वास को बढ़ाता है। परिणामस्वरूप, हिंदी केवल कार्य की भाषा न रहकर भावों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाती है।

'सह्याद्रि' का नियमित प्रकाशन यह दर्शाता है कि कार्यालय प्रशासन हिंदी के संवर्धन के प्रति गंभीर और प्रतिबद्ध है। यह पत्रिका राजभाषा के संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन के साथ-साथ सांस्कृतिक समन्वय और राष्ट्रीय एकता की भावना को भी सुदृढ़ करती है।

निस्संदेह, हिंदी गृह पत्रिका 'सह्याद्रि' हिंदी के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान दे रही है। यह न केवल भाषा के विकास का माध्यम है, बल्कि कार्यालय के प्रत्येक कर्मचारी के हिंदी प्रेम का जीवंत दस्तावेज भी है। भविष्य में भी यह पत्रिका इसी प्रकार नई ऊँचाइयों को प्राप्त करती रहे और हिंदी के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला को सुदृढ़ करती रहे

—इसी शुभकामना के साथ।

संपादकीय मंडल

सं.रा.भा.अ./2025-26/230
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, रक्षा-वाणिज्यिक का कार्यालय,
बेंगलुरु-560001
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT,
DEFENCE-COMMERCIAL, BENGALURU-560001

दिनाँक/DATE: 13.02.2026

सेवा में,

सहायक निदेशक(राजभाषा)/राजभाषा अधिकारी,
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा, (केंद्रीय)
मुम्बई-400051

विषयः- प्रशंसा पत्र।

महोदय /महोदया,

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका "सह्याद्रि" का 40 वां अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका में सम्मलित सभी रचनाऐं पठनीय एवं प्रशंसनीय हैं। विशेष रूप से श्री भरत सोनी का लेख "सूरजकुण्ड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेला", श्री आशुतोष अनिल बिश्नोई की कविता "आजादी के अर्थ बदल डाले ", श्री शतशील कांबले का लेख "सेना का सिपाही राष्ट्र के असली नायक", श्री मयंक भट्ट की कविता "आखिर आप कौन!" आदि रोचक व ज्ञानवर्धक हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका हिन्दी कार्यान्वयन की दिशा में एक स्वर्णिम प्रयास है। पत्रिका के प्रकाशन के सफल प्रयास हेतु शुभकामनाएँ।

धन्यवाद,

भवदीया,
सहायक निदेशक(राजभाषा)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
INDIAN AUDIT & ACCOUNTS DEPARTMENT
पहला तल, बसव भवन, श्री बसवेश्वर रोड, बेंगलुरु-560001
1st Floor, Basava Bhavan, Sri Basweswara Road, Bengaluru-560001
भा./Phone: 080-2226 7646/2226 1168 फैक्स/Fax : 080-2226 2491
mail: pda.dc.blr@cag.gov.in

कर्नाटक

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) म.प्र.
53, अरेरा हिल्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल- 462011

क्र.हि.क./फा-7/ जावक - 79 दिनांक 20.11.2025

प्रति,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
मुंबई

विषय : अर्ध-वार्षिक हिन्दी ई-पत्रिका "सह्याद्रि" के 40वें अंक ई-प्रति की पावती बाबत ।
संदर्भ : आपका पत्र जावक सं.60 दिनांक 07.11.2025

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त संदर्भित पत्र के साथ आपके कार्यालय द्वारा "सह्याद्रि" के 40वें अंक के ई-प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद । पत्रिका में सभी रचनाएँ प्रशंसनीय है विशेष तौर पर आजादी के अर्थ बदल डाले, हरियाणा के शीर्ष 10 पर्यटन स्थल, एक अविस्मरणीय यात्रा,भारतीय संविधान अनुच्छेद 21, रक्तचाप और ब्लड शुगर, रिश्ते में नफा-नुकसान नहीं देखा जाता, आदि रचनाएँ सारगर्भित एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम हैं। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनाएं

प्रफुल्ल
सहायक निदेशक (राजभाषा)

मध्य प्रदेश

980

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय), चण्डीगढ़
Indian Audit & Accounts Department
Office of The Principal Director of Audit (Central), Chandigarh

पीडीए (के.)/राजभाषा/सन्देश/2025-26/227 दिनांक 24/11/25

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
का. प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा(केंद्रीय),
मुंबई, महाराष्ट्र। 400051

विषयः– हिंदी ई-पत्रिका "सह्याद्रि" के 40वें अंक के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" की एक ई- प्रति दिनांक 11.11.25 को प्राप्त हुई । पत्रिका का यह अंक भेजने हेतु आपका हार्दिक आभार।विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका जैसे "इन्तजार और उम्मीद ", "प्रेम-एक अहसास", "अस्पताल और मनष्य और कश्मीर –सुन्दरता और सहनशीलता की यात्रा आदि "अत्यंत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक एवं हृदय को भावविभोर करने वाली रचनाएँ है ।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। सभी रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएँ।

सधन्यवाद।

भवदीया,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

प्लाट न. 20-21, सेक्टर - 17ई, चण्डीगढ़ - 160017 Plot No. 20-21, Sector-17E, Chandigarh - 160017
दूरभाष/ Tel.No. 0172 – 2782020 & 2706117 फैक्स/ FAXNo :0172 – 2782021 / 2783974 ई-मेल/ Email: pdacchandigarh@cag.gov.in

तमिलनाडु

कार्यालय प्रधान महालेखाकार
(लेखापरीक्षा–I) तमिलनाडु
आडिट भवन,
361, अण्णा सालै, तेनाम्पेट,
चैन्नै–600 018.

OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I) TAMIL NADU
AUDIT BHAVAN,
361, ANNA SALAI, TEYNAMPET,
CHENNAI – 600 018.

सं. प्र.मले. (लेप-I)/हिं.अनु./प्रशं.पत्र/14-02/2025-26/39 दिनांक:04-12-2025

सेवा में

सहायक निदेशक (राजभाषा),
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय),
मुंबई.

विषयः हिंदी पत्रिका 'सह्याद्रि' के 40 वें अंक पर अभिमत।

महोदया,

आपके कार्यालय से प्रकाशित अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका **'सह्याद्रि'** के ***40 वें*** अंक की ई-प्रति सादर प्राप्त हुई । धन्यवाद। राजभाषा हिन्दी के विकास यात्रा में पत्रिका के माध्यम से रचनाकारों के भावनाओं एवं विचारों को शब्दों की माला में पिरोकर दूसरों तक पहुँचाने का प्रयास सच में प्रशंसनीय है। पत्रिका में प्रकाशित संपूर्ण सामग्री पठनीय, रोचक , ज्ञानवर्धक एवं उच्चस्तरीय हैं। पत्रिका की साज-सज्जा एवं मुखपृष्ठ में बांद्रा-वर्ली सी लिंक का चित्र अत्यंत आकर्षक है । रचनाएं- 'छत्रपति शिवाजी महाराज : जीवनी, इतिहास और प्रशासन' , 'एक अविस्मरणीय यात्रा, 'मैं हुआ रिटायर,' 'अस्पताल और मनुष्य', 'शांतिमय समरसता-एक साधु की कहानी', ' शांत चेहरा, उदास मन विशेष उल्लेखनीय हैं। पत्रिका में छपे छाया चित्रों से कार्यालय में आयोजित राजभाषा गतिविधियों की जानकारी मिलती है। राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार में पत्रिका का योगदान सराहनीय है। सभी लेखक अभिनंदन के पात्र हैं। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना के साथ पत्रिका के सफल संपादन एवं सुंदर प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

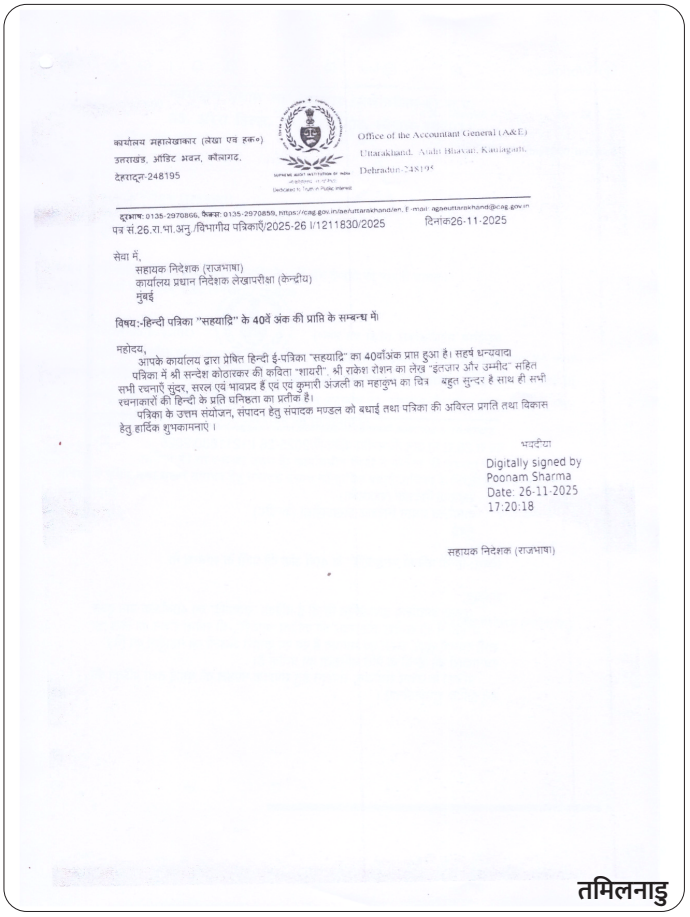
सधन्यवाद!!

भवदीया,

Digitally signed by Shibi K Manjooran
Date: 04-12-2025 12:15:20
शिबी के मंजूरन
सहायक निदेशक (राजभाषा)

दूरभाष/Phone: 044 -2431 6400 फैक्स /Fax: 044 – 2433 0012 तार /Email: agautamilnadu1@cag.gov.in

पंजाब



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
उत्तराखंड, ऑडिट भवन, कौलागढ़,
देहरादून-248195

Office of the Accountant General (A&E)
Uttarakhand, Audit Bhawan, Kaulagarh,
Dehradun-248195

दूरभाष: 0135-2970866, फैक्स: 0135-2970859, https://cag.gov.in/ae/uttarakhand/en, E-mail: agaeuttarakhand@cag.gov.in

पत्र सं.26.रा.भा.अनु./विभागीय पत्रिकाएँ/2025-26 I/1211830/2025 दिनांक26-11-2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय)
मुंबई

विषय:-हिन्दी पत्रिका "सह्याद्रि" के 40वें अंक की प्राप्ति के सम्बन्ध में।

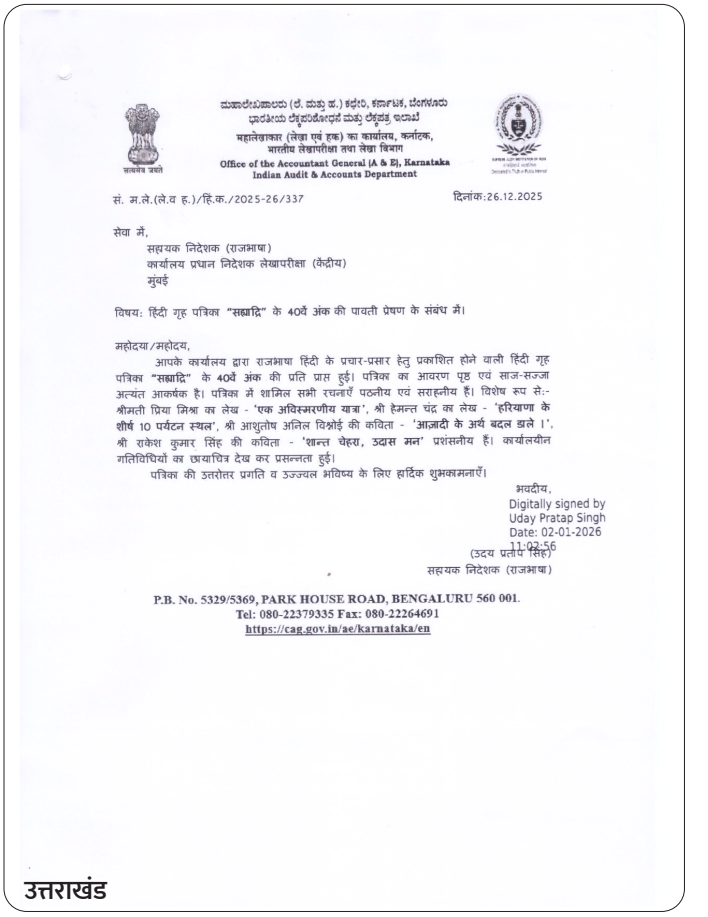
महोदय,
आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी ई-पत्रिका "सह्याद्रि" का 40वाँअंक प्राप्त हुआ है। सहर्ष धन्यवाद।
पत्रिका में श्री सन्देश कोठारकर की कविता 'शायरी' श्री राकेश रोशन का लेख 'इंतज़ार और उम्मीद' सहित सभी रचनाएँ सुंदर, सरल एवं भावप्रद हैं एवं एवं कुमारी अंजली का महाकुंभ का चित्र बहुत सुन्दर है साथ ही सभी रचनाकारों की हिन्दी के प्रति निष्ठता का प्रतीक है।
पत्रिका के उत्तम संयोजन, संपादन हेतु संपादक मण्डल को बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभकामनाएं ।

भवदीया

Digitally signed by
Poonam Sharma
Date: 26-11-2025
17:20:18

सहायक निदेशक (राजभाषा)

तमिलनाडु



ಮಹಾಲೇಖಪಾಲರು (ಲೆ. ಮತ್ತು ಹ.) ಕರ್ನಾಟಕ, ಬೆಂಗಳೂರು
ಭಾರತೀಯ ಲೆಕ್ಕಪರಿಶೋಧನೆ ಮತ್ತು ಲೆಕ್ಕಪತ್ರ ಇಲಾಖೆ
महालेखाकार (लेखा एवं हक) का कार्यालय, कर्नाटक,
भारतीय लेखापरीक्षा तथा लेखा विभाग
Office of the Accountant General (A & E), Karnataka
Indian Audit & Accounts Department

सं. म.ले.(ले.व ह.)/हिं.क./2025-26/337 दिनांक:26.12.2025

सेवा में,
सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
मुंबई

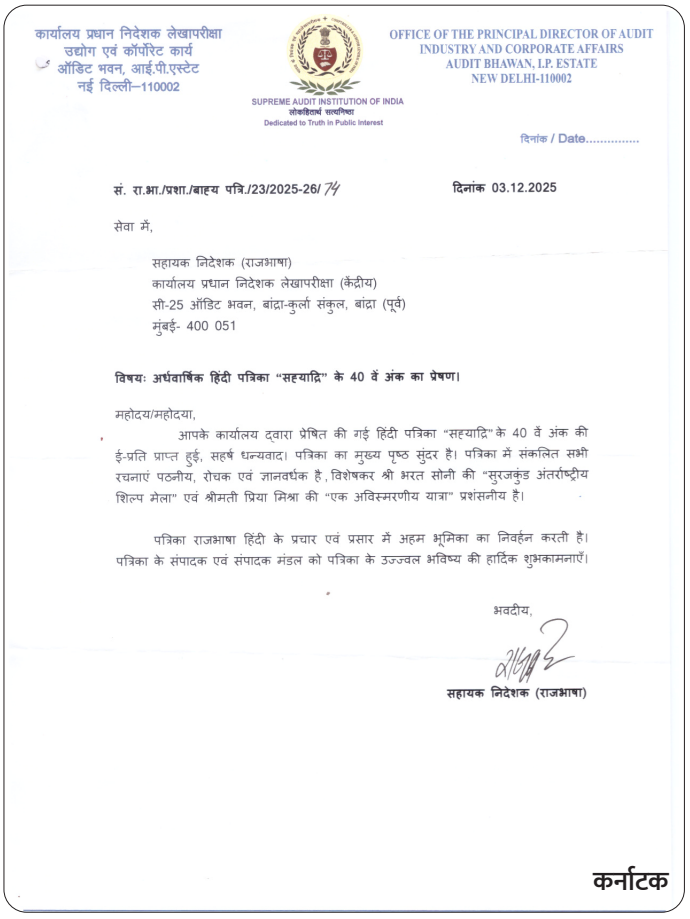
विषय: हिंदी गृह पत्रिका **"सह्याद्रि"** के 40वें अंक की पावती प्रेषण के संबंध में।

महोदया/महोदय,
आपके कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रकाशित होने वाली हिंदी गृह पत्रिका **"सह्याद्रि"** के 40वें अंक की प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं साज-सज्जा अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका में शामिल सभी रचनाएँ पठनीय एवं सराहनीय हैं। विशेष रूप से:- श्रीमती प्रिया मिश्रा का लेख - **'एक अविस्मरणीय यात्रा'**, श्री हेमन्त चंद्र का लेख - **'हरियाणा के शीर्ष 10 पर्यटन स्थल'**, श्री आशुतोष अनिल विश्नोई की कविता - **'आज़ादी के अर्थ बदल डाले ।'**, श्री राकेश कुमार सिंह की कविता - **'शान्त चेहरा, उदास मन'** प्रशंसनीय हैं। कार्यालयीन गतिविधियों का छायाचित्र देख कर प्रसन्नता हुई।
पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति व उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,
Digitally signed by
Uday Pratap Singh
Date: 02-01-2026
11:02:56
(उदय प्रताप सिंह)
सहायक निदेशक (राजभाषा)

P.B. No. 5329/5369, PARK HOUSE ROAD, BENGALURU 560 001.
Tel: 080-22379335 Fax: 080-22264691
https://cag.gov.in/ae/karnataka/en

उत्तराखंड



कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा
उद्योग एवं कॉर्पोरेट कार्य
ऑडिट भवन, आई.पी.एस्टेट
नई दिल्ली–110002

OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
INDUSTRY AND CORPORATE AFFAIRS
AUDIT BHAWAN, I.P. ESTATE
NEW DELHI-110002

SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
सत्यमेव जयते
Dedicated to Truth in Public Interest

दिनांक / Date.....

सं. रा.भा./प्रशा./बाह्य पत्रि./23/2025-26/ 74 **दिनांक** 03.12.2025

सेवा में,

सहायक निदेशक (राजभाषा)
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय)
सी-25 ऑडिट भवन, बांद्रा-कुर्ला संकुल, बांद्रा (पूर्व)
मुंबई- 400 051

विषय: अर्धवार्षिक हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" के 40 वें अंक का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

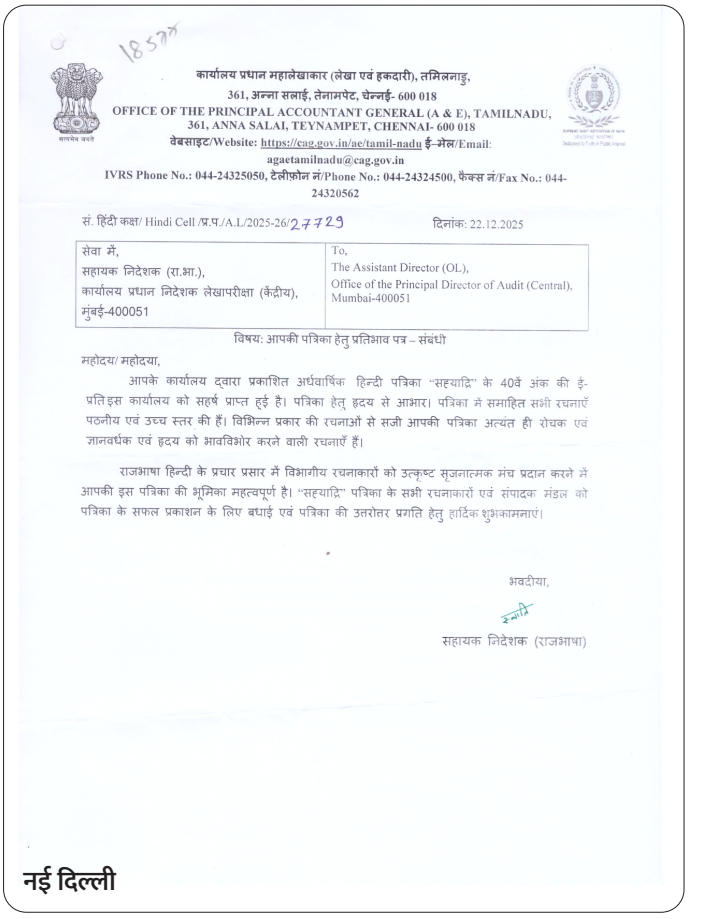
आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित की गई हिंदी पत्रिका "सह्याद्रि" के 40 वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का मुख्य पृष्ठ सुंदर है। पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रोचक एवं ज्ञानवर्धक है, विशेषकर श्री भरत सोनी की "सुरजकुंड अंतर्राष्ट्रीय शिल्प मेला" एवं श्रीमती प्रिया मिश्रा की "एक अविस्मरणीय यात्रा" प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार एवं प्रसार में अहम भूमिका का निर्वहन करती है। पत्रिका के संपादक एवं संपादक मंडल को पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

कर्नाटक



18577

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), तमिलनाडु,
361, अन्ना सलाई, तेनामपेट, चेन्नई- 600 018
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A & E), TAMILNADU,
361, ANNA SALAI, TEYNAMPET, CHENNAI- 600 018
वेबसाइट/Website: https://cag.gov.in/ae/tamil-nadu ई-मेल/Email:
agaetamilnadu@cag.gov.in
IVRS Phone No.: 044-24325050, टेलीफ़ोन नं/Phone No.: 044-24324500, फैक्स नं/Fax No.: 044-24320562

सं. हिंदी कक्ष/ Hindi Cell /प्र.प./A.L/2025-26/27729 दिनांक: 22.12.2025

सेवा में, सहायक निदेशक (रा.भा.), कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय), मुंबई-400051	To, The Assistant Director (OL), Office of the Principal Director of Audit (Central), Mumbai-400051

विषय: आपकी पत्रिका हेतु प्रतिभाव पत्र – संबंधी

महोदय/ महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक हिन्दी पत्रिका "सह्याद्रि" के 40वें अंक की ई-प्रति इस कार्यालय को सहर्ष प्राप्त हुई है। पत्रिका हेतु हृदय से आभार। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ पठनीय एवं उच्च स्तर की हैं। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आपकी पत्रिका अत्यंत ही रोचक एवं ज्ञानवर्धक एवं हृदय को भावविभोर करने वाली रचनाएँ हैं।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार में विभागीय रचनाकारों को उत्कृष्ट सृजनात्मक मंच प्रदान करने में आपकी इस पत्रिका की भूमिका महत्वपूर्ण है। "सह्याद्रि" पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीया,

सहायक निदेशक (राजभाषा)

नई दिल्ली

स्त्री एक सम्मानित मानव

समाज की सोच में परिवर्तन की आवश्यकता



श्री मिथिलेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकरी

(ऑल इंडिया ऑडिट एंड अकाउंट्स ऑफिसर्स एसोसिएशन द्वारा आयोजित अखिल भारतीय अंग्रेजी निबंध प्रतियोगिता, 2025 में तृतीय पुरस्कार प्राप्त निबंध का हिंदी अनुवाद।)

इस पृथ्वी पर शायद ही कोई अन्य प्रजाति होगी जिसके संदर्भ में ऐसे किसी विषय पर विचार करने की आवश्यकता पड़ी हो। प्रकृति ने सभी जीवों के लिए विपरीत लिंग की रचना लगभग समान महत्व और संख्या के साथ की है। फिर ऐसा क्या हुआ कि विकसित होमो सेपियन्स, जो पूरे ग्रह पर शासन करता है, उस स्थिति में आ पहुँचा जहाँ उसकी ही आधी आबादी की स्थिति इतनी दयनीय हो गई—यह विचारणीय प्रश्न है।

प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक, विश्व के विभिन्न हिस्सों में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जो यह दर्शाते हैं कि समाज ने महिलाओं के महत्व को स्वीकार किया है। हम भारतीय गर्व से कहते हैं—"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता", अर्थात जहाँ नारी की पूजा होती है, वहाँ देवताओं का वास होता है। इतिहास और संस्कृति में स्त्री को देवी, जननी और शक्ति के रूप में देखा गया है। विश्व के अन्य समाजों में भी ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं जो यह आभास देते हैं कि महिलाओं को सम्मान दिया गया। किंतु, एक प्रशिक्षित लेखा-परीक्षक की दृष्टि से देखें तो ये कथन और प्रतीक अधिकतर आदर्श हैं—वह लक्ष्य जिसे समाज ने घोषित तो किया, पर वास्तविकता में शायद ही कभी पूरी तरह अपनाया।

अतीत और वर्तमान में महिलाओं की परिस्थितियों का आकलन हमें आईना दिखाता है और हमें सिमोन द बोउवार (प्रसिद्ध पुस्तक "द सेकेंड सेक्स" की लेखिका) के इस कथन से और अधिक सहमत होने को बाध्य करता है कि— "स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि बनाई जाती है।" यह कथन जैविक नियतिवाद को चुनौती देता है और यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक अपेक्षाएँ महिलाओं के जीवन को किस प्रकार गढ़ती हैं।

सही मानक तो सहज समानता होनी चाहिए थी - न तो पूजन न ही शोषण। मानकों और वास्तविक परिस्थितियों के बीच की खाई को समझने के लिए महिलाओं की सामाजिक स्थिति से जुड़े आँकड़ों पर दृष्टि डालना आवश्यक है। सोशल मीडिया, फ़िल्मों या अपने सीमित परिचय-क्षेत्र को देखकर ऐसा लग सकता है कि महिलाओं ने समानता प्राप्त कर ली है या बहुत बड़ी छलांग लगा ली है। कुछ पुरुष तो यह भी शिकायत भी कर लेते हैं कि महिलाओं को उनसे अधिक अधिकार मिल रहे हैं। ऐसे विचारों का एकमात्र उत्तर तथ्य और आँकड़े ही हो सकते हैं।

- वैश्विक स्तर पर बालिकाओं की शिशु मृत्यु दर, स्वास्थ्य सेवाओं और पोषण तक उनकी पहुँच अब भी गंभीर मुद्दा है। भारत में 2023 में बालिकाओं की शिशु मृत्यु दर 1,000 जीवित जन्मों पर 27 रही, जो लिंग-आधारित उपेक्षा के कारण लड़कों से अधिक है।
- बचपन से ही लड़कों और लड़कियों का पालन-पोषण अलग-अलग ढंग से किया जाता है। लड़कों को सफलता के सपने देखने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जबकि लड़कियों को विवाह और देखभाल की भूमिकाओं में ढालने की शिक्षा दी जाती है।
- वैश्विक महिला साक्षरता दर लगभग 83% है, जबकि भारत में यह लगभग 70% है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्र काफी पीछे हैं।
- महिलाओं के निर्णयों पर निगरानी व्यापक है। उनके पहनावे, करियर विकल्पों और यहाँ तक कि आवाजाही पर भी परिवार, समाज और सामाजिक मानदंडों का नियंत्रण रहता है। यह प्रवृत्ति शिक्षित वर्गों में भी देखने को मिलती है।
- विश्व भर में लगभग 30% महिलाओं ने अपने जीवन में किसी न किसी समय शारीरिक या यौन हिंसा का अनुभव किया है—चाहे वह अंतरंग साथी द्वारा हो या किसी अन्य द्वारा। यह संख्या लगभग 73.6 करोड़ महिलाओं तक पहुँचती है। भारत में भी लगभग इतनी ही प्रतिशत महिलाओं ने अपने जीवन में कम से कम एक बार घरेलू हिंसा झेली है, जिनमें से अनेक मामले सामाजिक कलंक के कारण दर्ज ही नहीं हो पाते।
- यूनिसेफ के अनुसार, आज जीवित 37 करोड़ से अधिक लड़कियाँ और महिलाएँ—अर्थात हर आठ में से एक—18 वर्ष की आयु से पहले यौन उत्पीड़न का शिकार हो चुकी हैं।
- वैश्विक स्तर पर महिला श्रम बल भागीदारी दर लगभग 50% है, जबकि पुरुषों के लिए यह लगभग 80% है। भारत में यह दर विश्व में सबसे कम में से एक है—2024 तक केवल



लगभग 19% महिलाएँ ही कार्यबल में शामिल हैं।

- वैश्विक स्तर पर संसदों में महिलाओं की हिस्सेदारी केवल 23% है, जबकि भारत में यह लगभग 15% है।
- विश्व आर्थिक मंच की जेंडर गैप रिपोर्ट (2023) के अनुसार, विश्व की 85% संपत्ति पर पुरुषों का नियंत्रण है। महिलाएँ नेतृत्व पदों में अब भी अत्यंत कम प्रतिनिधित्व रखती हैं। भारत जेंडर समानता में 146 देशों में 135वें स्थान पर है।
- OECD के अनुसार, भारतीय महिलाएँ प्रतिदिन औसतन 6 घंटे अवैतनिक श्रम (घरेलू कार्य और देखभाल) में लगाती हैं, जबकि पुरुष एक घंटे से भी कम योगदान देते हैं। यह श्रम जीडीपी की गणना में शामिल नहीं होता, जिससे आर्थिक निर्भरता और गहराती है।

समाज ने महिलाओं पर यह दबाव डाला है कि वे इन दमनकारी असमानताओं के विरुद्ध आवाज़ न उठाएँ। उनसे "आदर्श" बनने की अपेक्षा की जाती है—परिवार की प्रतिष्ठा के लिए चुप रहना, धैर्य के नाम पर कष्ट सहना और स्वयं से पहले दूसरों को प्राथमिकता देना। इससे एक ऐसा दुष्चक्र बनता है, जिसमें शिक्षित महिलाएँ भी इन अपेक्षाओं को चुनौती देने के बजाय आत्मसात कर लेती हैं। यहीं समाज का झूठ और जाल स्पष्ट हो जाता है।

जब कोई बलात्कार या हत्या होती है, तो हम स्तब्ध हो जाते हैं, पर यह प्रश्न नहीं पूछते कि ऐसे अपराधी बनते कैसे हैं। वही समाज जो आज न्याय की माँग करता है; स्त्री-विरोधी सोच को सामान्य बनाता है, पीड़ितों को चुप कराता है, कार्यस्थलों पर लैंगिक टिप्पणियाँ करता है और पुरुषों में आक्रामकता को बढ़ावा देता है। यदि हम वास्तव में ऐसे अपराधों को समाप्त करना चाहते हैं, तो हमें अपराधियों को गढ़ना बंद करना होगा। किसी घटना के बाद उससे जुड़े वीडियो या तस्वीरों के लिए गूगल खोजों में आई बेतहाशा वृद्धि सामाजिक पाखंड को सबसे अधिक उजागर करती है। यह महिलाओं के प्रति समाज की सड़ी हुई मानसिकता का प्रतिबिंब है। जब तक इस दोहरेपन को स्वीकार कर उसका सामना नहीं किया जाएगा, वास्तविक परिवर्तन संभव नहीं है।

परिवर्तन केवल कानूनों या प्रदर्शनों से नहीं आएगा, बल्कि गहरे व्यक्तिगत आत्मबोध से आएगा। सार्वजनिक रूप से नैतिक दिखना पर्याप्त नहीं है, जब भीतर अंधकार भरा हो। जो पुरुष दिन में बलात्कार के विरुद्ध प्रदर्शन करता है, लेकिन निजी जीवन में महिलाओं को वस्तु समझता है, वह भी इस अपराध के लिए उतना ही उत्तरदायी है। वास्तविक परिवर्तन तब आएगा जब पुरुष महिलाओं को कामना की वस्तु या सामाजिक प्रतिष्ठा का प्रतीक नहीं, बल्कि समान मानव के रूप में देखेंगे।

कठोर कानून और सख्त दंड अक्सर समाधान के रूप में सुझाए जाते हैं, पर कोई भी नियम-पुस्तिका व्यक्ति के विचारों और इच्छाओं को नियंत्रित नहीं कर सकती। वास्तविक समाधान शिक्षा में है—बचपन से ही गरिमा, सम्मान और जिम्मेदारी सिखाने में।

शिक्षा यदि केवल रोजगार और प्रतिस्पर्धा सिखाए, लेकिन संवेदना, आत्मसंयम और दृष्टि की शुद्धता न सिखाए, तो वह अपराध को रोकने में असफल रहती है। यदि मन दूषित है, तो कोई बाहरी व्यवस्था नैतिकता लागू नहीं कर सकती। इसलिए मानसिकता में परिवर्तन ही वह प्रारंभिक और सबसे प्रभावी उपाय है, जिसे अपनाकर ही हम स्वयं को सच में सभ्य होमो सेपियन्स कहलाने योग्य बना सकते हैं। ■

बीरबल: एक लघु शोध



श्री भरत सोनी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकरी

भविष्य पुराण की एक कहानी सुनाता हूँ "प्रयागराज में, जिसको 'इलाहाबाद' के नाम से भी जानते थे, बाल मुकुंद ब्रह्मचारी के नाम के एक तपस्विनी और उनके बीस अनुयायी / शिष्य रहते थे। बाबर के अत्याचारों को देखकर वह बहुत त्रस्त और दुखी हो जाते हैं और हवन की अग्नि में अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेते हैं। बाल मुकुंद ने गाय का एक बाल दूध के साथ पी लिया था, जिसकी वजह से उनको पुनः जन्म लेना पड़ता है वह भी म्लेक्ष के घर में। तो यह मान्यता है कि हुमायूं के यहां जो पुत्र पैदा हुआ-अकबर, वह वही बालमुकुंद है, और उनके साथ 20 शिष्यों में से एक ने ब्राह्मण के घर पर जन्म लिया, महेशदास के नाम से, जिसे आगे चल कर 'बीरबल' के नाम से जाना जाता है। उनको सरस्वती का आशीर्वाद होता है। अकबर तेजस्वी राजा है और वह लगभग 50 साल तक राज करते हैं अपने अनुयायियों के साथ और उसके बाद स्वर्ग की तरफ प्रस्थान करते हैं।"

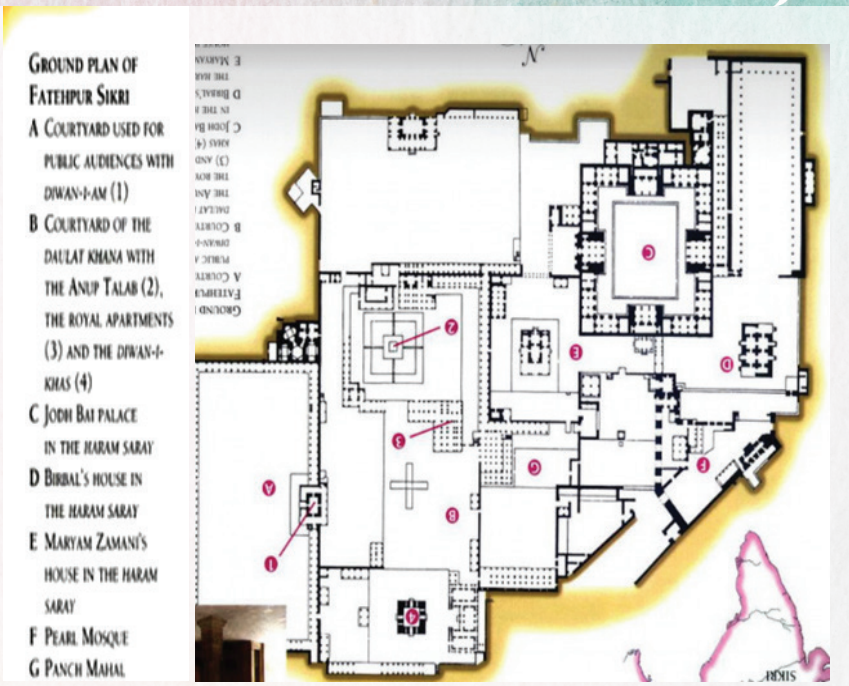
अकबर अकेला मुसलमान राजा था जो 'भविष्य पुराण' में वर्णित है पर ये कहानी बीरबल की है। मध्य प्रदेश के सीधी जिले के घोघरा गाँव में 1528 में गंगादास ब्राह्मण के घर में महेशदास का जन्म होता है यह एक भट्ट ब्राम्हण परिवार था और स्तुति गा कर अपने परिवार का भरण पोषण करता था। महेशदास बचपन से ही प्रतिभाशाली थे। ब्रजभाषा में, 'ब्रम्हकवि' के नाम से, कविता रचते थे। बहुत जल्दी इनकी ख्याति रीवा के राजा रामचंद्र के दरबार तक पहुंच जाती है जो उस समय 'बांधवगड' कहलाता था। वे रीवा के राजदरबार में पहुँच जाते है और राजकवि बन जाते है वहां से महेशदास, आमेर (जयपुर) दरबार में पहुंचते है और 1556 में महेशदास, अकबर के दरबार में पहुंचते है। अकबर, महेशदास की रचनाओं से इतने प्रभावित होते है कि 'कविराय' की उपाधि देते है बहुत जल्दी इन्हे 'राजा' की उपाधि भी मिलती है और 2000 की मनसबदारी भी मिलती है जो कि मुग़ल राज दरबार में ऊंचा रुतबा होता था। 1574 तक अकबर इनकी निष्ठा, राजभक्ति और सूझबूझ से इतने प्रभावित होते हैं कि 'वीरवर' के उपाधि देते है 'वीरवर' 'बेताल-पच्चीसी' नामक कहानी संग्रह की तीसरी कहानी के मुख्य किरदार है जो अपनी निष्ठा, राजभक्ति और सूझबूझ के लिए बहुत मशहूर था। यही 'वीरवर' की उपाधि थी जो महेशदास के असल नाम से अधिक प्रसिद्ध हुई और आज हम महेशदास को 'बीरबल' के नाम से जानते है. जबकि यह कोई नाम नहीं था बल्कि एक उपाधि थी। बीरबल के जीवन के अंत तक, अकबर ने बीरबल को 25 उपाधियाँ प्रदान की थी। इतनी उपाधियाँ इनके अलावा अब्दुल रहीम खान-ए-खाना के पास ही थी जो की अकबर के नवरत्नों में से एक थे।

आज सभी बीरबल को अकबर के मनोरंजक दरबारी के रूप में जानते है ये कई अन्य कहानियो, लोककथाओं और कथाओ की एक समृद्ध परंपरा का हिस्सा बन गए हैं परन्तु वास्तविकता में बीरबल बहुत गंभीर और विचारवान पदाधिकारी थे। अकबर के राज्य के प्रशासन, सैन्य और कूटनीतिक मामलों में सलाहकार थे और धार्मिक मामलों में भी अकबर, बीरबल से सलाह लेते थे। अकबर के लिए डुंगरपुर की राजकुमारी की शादी का प्रस्ताव बीरबल की कूटनीतिक महारत का प्रमाण था। अकबर ने जितने भी बड़े सैन्य अभियान किये थे चाहे वो बंगाल हो या पंजाब हो या गुजरात, सभी में बीरबल, अकबर के साथ थे। अकबर ने बीरबल के इस योगदान से खुश होकर बीरबल को फतेहपुर-सीकरी में अपने राजसी प्रांगण में रहवास दिया था। बीरबल के महत्व को इस बात से समझ सकते है कि अकबर की राजधानी फतेहपुर-सीकरी के नौ दरवाजे थे उनमे से एक दरबाजे का नाम 'बीरबल' दरवाजा था. आज भी फतेहपुर-सीकरी में, 'बीरबल महल' देख सकतें है जो अकबर के महल के सबसे पास है। *(कृपया मैप देखे)*

अकबर और बीरबल की जितनी भी कहानियाँ है वे सभी बुद्धिमत्ता के साथ हर समस्या के समाधान तक पहुंचने की कहानियाँ है ये







कहानियाँ सदियों से चली आ रही है इनमे सच्चाई नहीं है जैसे एक कहानी है जिसमे अकबर, बीरबल को बोलते हैं कि मैंने एक सपना देखा हम दोनों चल रहे थे और मैं गड्ढे में गिरा जिसमें शहद था और तुम जिस गड्ढे में गिरे जिसमें कीचड़ था। तो बीरबल बोलते है कि इसके आगे का सपना मैंने देखा कि जब हम बाहर निकले तो मैंने आप को चाट कर साफ़ किया और आपने मुझे चाट कर साफ़ किया। यही कहानी अकबर-बीरबल के पहले तेनालीराम के मुँह से सुनी जा सकती है (जो बारहवीं शताब्दी के है) और उसके पहले यहीं कहानियाँ इसके पहले 10वीं शताब्दी में इस्लामिक दुनिया में प्रसिद्ध थी। बस इस कहानी के पात्र बदलते रहते है. पर सच्चाई ये है कि बीरबल एक गंभीर व्यक्ति थे और अकबर की तात्कालिक और दीर्घकालिक नीति, यहाँ तक कि 'धार्मिक नीति'- 'दीन ए इलाही' के पीछे भी, बीरबल की बुद्धि और सलाह थी। इसी के चलते अकबर ने गोकुल के आसपास के अनेक गुरुकुलों का दौरा किया था और अनेको गुरुकुलों को सनद और उपहार दिए थे एक बार अकबर ने अपने राजदरबारियों से पूछा कि "मैं अपने राजपाट को बेहतर करने के लिया क्या कर सकता हूँ". तो बीरबल ने सलाह दी पूरे राज्य में शिकायतों को प्राप्त करने और उस पर उचित कार्यवाही की व्यवस्था होनी चाहिए। इस सलाह पर अकबर ने अपने राजपाट में परिवर्तन किया और न्याय व्यवस्था में सुधार किए और न्याय व्यवस्था में उच्च पद पर बीरबल को पदस्थ किया, उनके साथ अबुल फज़ल को भी लगा दिया। जिसके कारण अकबर इतना राज्य विस्तार कर सका। अकबर की राजनैतिक , सैन्य, धार्मिक और सामाजिक सफलता में बीरबल का हाथ था ना कि जोधाबाई का जैसा कि फिल्म 'जोधा-अकबर' में दर्शाया गया है।

यह माना जाता है बीरबल के 30 साल के दरबारी काल में अकबर एक बार भी नाराज नहीं हुए और ना ही अकबर ने बीरबल को दंड दिया। अकबर के दरबार में तानसेन और फ़ैज़ी ही ऐसे व्यक्ति थे जो इतने समय दरबार में रहा हो और अकबर कभी नाराज न हुआ हो। आम तौर पर यह होता है कि सेवक, मालिक के लिए मरने को तैयार होता है और मालिक, सेवक की जान बचाए ऐसा शायद ही हो। पर यह भी अकबर और बीरबल के बीच में हुआ था। मुगलों को 'चौगान' नाम के खेल खेलने का बहुत शौक था यह आजकल के पोलों के जैसा खेल था और रात को जलती हुई गेंद से, घोड़ों पर चढ़ कर, खेला जाता था। 1583 में यह 'चौगान' खेली जा रही थी जिसमें बीरबल खेलते-खेलते अपने घोड़े से गिर जाते हैं और बेहोश हो जाते है अकबर जैसे ही यह देखते हैं तुरंत वहां पहुंचते हैं और अबुल फज़ल लिखते हैं "अकबर ने अपनी सांसो से बीरबल के होश वापस लाए" (जिसे हम आज हम CRP कहते है) इसी प्रकार से अकबर ने दूसरी बार 1585 में बीरबल की जान एक मदमस्त हाँथी से बचाई थी।

बात 1586 की है, जब यूसुफजई पठानों ने, अफगानिस्तान में विद्रोह कर दिया था और वहां के सेनापति जैनखान ने अतिरिक्त सेना भेजने की मांग की। अकबर, पहले अबुल फज़ल को वहाँ, भेजना चाहता था पर फिर अकबर के दिमाग में आया की एक लॉटरी से नाम निकालते है और उसमें बीरबल का नाम आया। बीरबल, अकबर से विदा लेकर अफगानिस्तान की ओर चल देते है. (21 जनवरी 1586) वहां के सेनापति

जैन खान के साथ बीरबल के कुछ पटती नहीं है और इस कारण से, सामंजस्य का अभाव हो जाता है इस कारण जीत के बाद, जब बीरबल लौट रहे थे, तभी एक दर्रे से गुजरते समय पठानों ने, ऊपर से उनकी सेना पर हमला कर दिया। इस हमले में 8000 सैनिक और बीरबल भी मारे जाते है (16 फ़रबरी 1586)।

यह खबर अकबर को अगले दिन मिलती है ! हिंदुस्तान के बादशाह की आंखें गमगीन थी क्योंकि उनका सबसे भरोसेमंद साथी उन्हें छोड़कर जा चुका था।

अकबर को अफसोस था कि उन्हें अपने इस नवरत्न को यूसुफजई के क्षेत्र में नहीं भेजना चाहिए था लेकिन जो होना था वो हो चुका था उनके सबसे भरोसेमंद साथी, नौ रत्नों में से एक, बीरबल ने दुनिया को हमेशा के लिए अलविदा कह दिया था।

दरबारी दस्तावेज बताते है कि सिर्फ पांच मौकों पर अकबर राजपाट के कामों से दूर हुए थे. बीरबल के मृत्यु खबर सुनकर अकबर राजपाट के कामों से दूर हो जाते है ! और दो दिन तक खाना पीना बंद कर देते है और अपनी माँ हमीदा बेगम के समझाने पर तीसरे दिन खाना खाते है और राजपाट के काम में रूचि लेते है। पर बीरबल के जाने के बाद, अकबर का शोक कभी कम नहीं हुआ। अकबर ने रहीम खान-ए-खाना को छह पृष्ठ का एक पत्र लिखा है जिसमे बीरबल की मृत्यु के लिए स्वयं को जिम्मेदार माना है और पूरे पत्र में बीरबल की तारीफ की है और विलाप किया है। और कहा है।

दीनन देखि सब दीन, एक ना दीन्हो दुसह दुख। सो अब हमको दीन कछहुँ ना राख्यो बीरबल

--(अर्थात बीरबल जब किसी दुखी व्यक्ति को देखता था तो उसे अपना सब कुछ दे देता था सिवाय अपने दुःख के। परन्तु बीरबल ने मुझे ऐसा दुःख दिया है (बीरबल की मृत्यु के रूप में) कि अपने पास कोई भी दुःख नहीं रखा (समस्त दुःख दे दिया).

अकबर और बीरबल के रिश्ते हो हम इस बात से समझ सकते है कि चूंकि दर्रे से बीरबल की मृत देह प्राप्त नहीं हुई थी, बीरबल की मृत्यु को अकबर स्वीकार नहीं कर पाया और यदि कोई आकर बोलता है कि "बीरबल को किसी ने अम्बाला में साधु वेष साधुओं के साथ में देखा है" या "बीरबल को किसी ने कालंजर में देखा है" तो अकबर उस बात की पुष्टि के लिए किसी दल को भेज देते है और ऐसा कई बार हुआ है। और अनेक बार खोजी दल को भेजने के बाद भी जब बीरबल का कोई पता नहीं चलता है तो अकबर के दरबारी दस्तावेज बताते हैं कि अकबर ने पुनः एक बार बीरबल की मृत्यु का शोक मनाया। ■

कर्तव्यों के उपरांत अधिकार



श्री आशुतोष 'अनिल' विश्नोई
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

जिजीविषा और महत्वाकांक्षा से परिपूर्ण सामाजिक परिपाटी के परकोटे में आस, प्यास और विश्वास पनपते हैं। अधिकारवाचक कारक का सृजन इन्हीं तीन मूल मानसिक अवस्थाओं की देन है। अधिक विवेचना हेतु इन अवस्थाओं के प्रचलित रूप आस अर्थात तमोगुण, प्यास अर्थात रजोगुण एवं विश्वास अर्थात सतोगुण के सापेक्ष चिंतन वांछित है।

संस्कारों का जीवनकाल में क्रम निश्चित है जहां सामाजिक व्यवस्था में साम्य हेतु संस्कारों एवं नियमनों का परिष्कृत निकाय युगों की विचारधारा से सृजित हुआ है, वहीं मनीषियों की विशिष्ट सारगर्भित सूक्तियों ने विचारशीलता को गतिमान रखा है। पूर्व निर्मित निकाय के विरुद्ध जब पथभ्रष्ट इकाई कुचेष्टा करती है, तब असंतुलन की स्थिति उत्पन्न होती है। इस आस, प्यास और विश्वास के विकल्प युक्त चुनाव की दुविधा में जब मनुष्य संस्कारों से समझौतों की अक्षम्य भूल कर बैठता है, तब समस्त मानसिक अवस्थाएँ आपके ही द्वारा खड़ी की गईं समस्याओं के माध्यम से आप का घेराव कर लेतीं हैं।

कर्तव्य और अधिकार जीवन में अतिमहत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं एवं क्रमबद्ध पालन द्वारा ही पालनकर्ताओं की सामाजिक साख निर्धारित करवाते हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक एवं यथोचित परस्पर घनिष्ठ संबंधों में गुथे हैं। कर्तव्य के पूर्व अधिकार कदाचित उचित नहीं हैं, अधिकारोपरांत प्रतिक्रिया और पीड़ितों के मर्म संस्मरणों द्वारा विचारों को सशक्त समर्थन प्राप्त है।

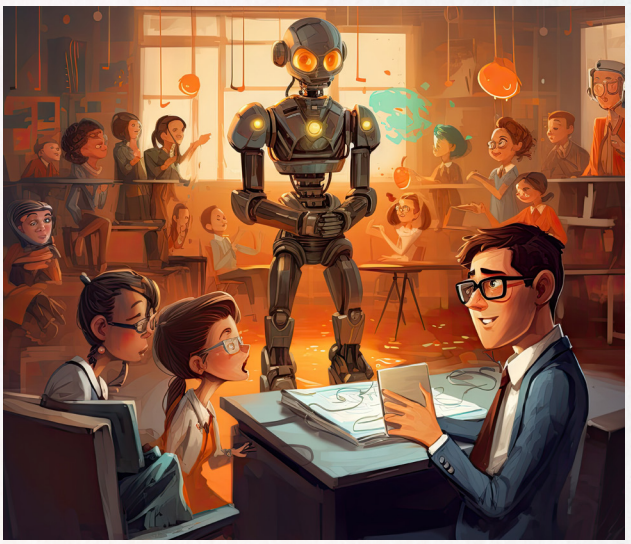
साधारणतः कर्तव्यों का अर्थ नियमित दिनचर्या में आने वाली जिम्मेदारियों से है, हमारे समाज एवं परिवार के प्रति कर्तव्यों से है, जिनके निर्वाह एवं परिपालन हेतु ही हमें पारिवारिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों ने चुना है। सदैव जो विचार सहायता करता है वह है "हम सभी के लिए और सभी हमारे लिए"।अधिकार सदैव भविष्यलक्षीय कर्तव्यों पर निर्भर करते हैं और "कर्तव्यों के उपरांत अधिकार" विचार का सृजन होता है, जो सर्वसम्मति से सर्वसाधारण द्वारा सर्वस्वीकार्य है। विचार वैयक्तिक एवं दृष्टि सीमा में रखे गए हैं और प्रायोगिक परीक्षणोपरांत ही आप के समक्ष प्रस्तुत हैं। आप भी "कर्तव्यों के उपरांत अधिकार" विचार पर चिंतन एवं सुधार हेतु प्रतिक्रिया देकर सहयोग करें। ■

AI वाला कोर्स और हम



श्री मिथिलेश कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकरी

कैग मुख्यालय एवं आई आई टी मद्रास द्वारा संयुक्त रुप से एआई एवं डाटा सांइस का कोर्स चलाया जा रहा है। दूसरा बैच जारी है और तीसरे की तैयारी है। कोर्स ऑनलाइन है (लगभग 1 वर्ष की अवधि वाला) दो बार आईआईटी मद्रास विजिट के साथ। सप्ताह में तीन दिन 10:00 बजे सुबह से 12:00 बजे दोपहर तक हर सप्ताह कम से कम 5-6 घंटे का होमवर्क, असाइनमेंट एवं हर मॉड्यूल में ग्रुप प्रोजेक्ट प्रेजेंटेशन इत्यादि के साथ और जिसमें हर बैच में लगभग 160 प्रतिभागी हैं। यह कविता उन अधिकतर प्रतिभागियों की मनोदशा एवं संघर्ष का चित्रण करती है जो कार्यालय के नियमित कार्य की व्यस्तता के बीच कोर्स कर रहे हैं।



कोर्स चल रहा है हम भी चल रहे हैं
आज का छूटा सेशन बाद में कर लेंगे
बहुत अच्छे से करेंगे इस झूठे दिलासे पर
पेंडेनसी बढ़ रही है काम टल रहे हैं
कोर्स चल रहा है हम भी चल रहे हैं.

अर्जेंट मीटिंग है, पी की क्यैरी है या है और भी कुछ
हकीकत है या बहानें.. यह सभी जानते हैं
ऑफिस और कोर्स साथ में मुश्किल.. सभी पहचानते हैं
बनावट कोर्स का तो है किसी सीढ़ी की तरह
गर छूट गए टूट गए कुछ डंडे
कद से. हद से बड़े फासले हो जाते हैं
कैच अप का प्लान रोज साथ लिए
बदहवास हम सिर्फ उछल रहे हैं
कोर्स चल रहा है हम भी चल रहे हैं

कुछ दिनों से अजीब सी है राहत भीतर
कि मैं ही नहीं.. और भी है.. आहत भीतर
क्लास में 160 में जब 60 नजर आते हैं
संतोष होता है सुरक्षित से नजर आते हैं
कुछ साथी जिन्हें पहले से आता है बहुत
सरपट भाग रहे हैं... हम फिसल रहे हैं...
हर ग्रुप में उनमें से ही कुछ के दम पर
प्रोजेक्ट बन रहे हैं हम भी सफल रहे हैं

खटकता है इंपोस्टर सिंड्रोम सा कभी
यह क्या कर रहे हैं क्यों चल रहे हैं
कोर्स चल रहा है हम भी चल रहे हैं
मन में चोर सा है ढूंढता पुरजोर बहाने
कि कब यूज करेंगे यह सब क्या जाने
अगला AI का मॉडल होगा कितना तगड़ा
ऑडिट के लिए हम होंगे या के AI क्या जाने
इस मुकाम पर यह भी नहीं हासिल सबको
के कोर्स के दम पर बाहर ही निकल जाएंगे
रखिएगा दिल पर हाथ और बताइएगा भी
हम ही हैं सिर्फ ऐसे या थोड़े से आप भी
मेरे ही साथ-साथ अभी चल रहे हैं
कोर्स चल रहा है हम भी चल रहे हैं

खुल के माने नहीं.. पर मन के किसी कोने में
सिर्फ सर्टिफिकेट के सपने पल रहे हैं
हम तो अपनी ही बता सकते हैं
सबको myth_less (मिथिलेश)
वे लोग भी समझें कितने सफल रहे हैं
कोर्स भाग रहा है और हम चल रहे हैं

कोई पड़ाव मिले संभलें और संभालें सब कुछ
समझ रहे हैं खुद को.. और शायद संभल रहे हैं
कोर्स चल रहा है हम भी चल रहे हैं
कल से पक्का .. ■

अंडमान की यात्रा



श्री आई.वी.एस. श्रीनिवास
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मैं कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा (नौसेना) विशाखापत्तनम में प्रतिनियुक्ति पर तैनात था। उन दिनों प्रत्येक वर्ष दो महीनों के लिए लेखापरीक्षा कार्य के लिए अंडमान कमान के अंतर्गत कार्यरत नौसेना कार्यालयों से अंडमान के दौरे के लिए हमे भेजा गया था। मैं इस संस्मरण के द्वारा मेरे कार्यालयीन कार्य के बीच समय निकालकर की गई व्यक्तिगत यात्रा के बारे में बताना चाहता हूँ।

हर रविवार को छुट्टी के दिन मैं अपने साथियों के साथ अंडमान द्वीप समूह में दर्शनीय स्थलों को देखने के लिए जाया करता था। इसी दौरान एक दिन एक स्थान 'बारातांग' के बारे में मैंने सुना जोकि एक दूसरा द्वीप था। मैंने अपने साथियों के साथ वहाँ घूमने की योजना बना डाली। 'बारातांग' पोर्ट ब्लेयर से लगभग 115 किलोमीटर दूर है और अपनी चूना पत्थर की गुफाओं, ज्वालामुखियों और मैंग्रोव जलधाराओं के लिए जाना जाता है। इस द्वीप पर हमारा मुख्य गंतव्य था 'चूना पत्थर की गुफ़ाएं'। अंडमान प्रशासन के वन विभाग के नियमों के अनुसार 'बारातांग' जाने के लिए सुबह पाँच बजे वन विभाग के मुख्य द्वार पर पहुंचना जरूरी है। वे प्रत्येक पर्यटक को उसका आधार कार्ड या कोई अन्य आईडी इत्यादि कागजातों का निरीक्षण करने के बाद ही एवं पुलिस के काफिले के साथ वन के अंदर जाने की इजाजत देते हैं क्योंकि प्रशासन के नियमों के अनुसार वन में 'जरावा' नामक जनजाति के लोग निवास करते हैं जिनके साथ बाहर के लोगों का संपर्क बनाना या उन्हे किसी भी प्रकार से छेड़ना सख्त मना है एवं इस निर्देश की अवहेलना एक दंडनीय अपराध है। वन में जाने से पहले सभी लोगों को यह बताया जाता है कि वे एक संवेदनशील जगह जा रहे हैं जहां किसी भी समय और कहीं से भी 'जरावा' लोगों द्वारा हमला किये जाने का डर बना रहता है अतः सभी लोग एक साथ एवं सुरक्षित स्थान पर ही रहें। यह भी निर्देश दिया जाता है कि कोई भी किसी भी प्रकार का धूम्रपान, तंबाकू सेवन, शराब सेवन इत्यादि न करे।

हमारी गाड़ी जंगल में कुछ ही आगे पहुंची थी कि एकाएक कुछ जरावा लोगों ने हमे घेर लिया। हम सबने सोचा की अब तो जरूर ही ये हम लोगों को नुकसान पहुंचाएंगे। डर के मारे हमे पसीने आ रहे थे। वे लोग भी दिखने में बहुत ही भयंकर लग रहे थे। काला शरीर, एक दम लंबा चौड़ा और हाथों में तीर-कमान। उन्हें देखकर हमारी ऊपर की सांस ऊपर रह गई। किसी को कुछ समझ नहीं आया कि क्या करे। लेकिन जैसा हमें बताया गया था और जैसा हमने सोचा था 'जरावा' लोग उसके एकदम विपरीत निकले। वे हमारी गाड़ी के पास आए, सर अंदर घुसा कर जाने क्या ढूँढने की कोशिश करने लगे। फिर इशारों में कुछ पूछा। शायद कुछ मांग रहे थे। हमने भी इशारों में मना कर दिया। फिर वो लोग बिना कुछ किए वहाँ से चले गए। तब जाकर हमारी जान में जान आई। गाड़ी आगे बढ़ी।

कुछ और सफर तय कर हम इस द्वीप के तट पर पहुंचे और वहाँ से नाव के द्वारा समुद्र प ार कर दूसरे द्वीप यानि 'बारातांग' के तट पर पहुंचे। तट से अंदर हमें करीब आधे घंटे का सफर और करना पड़ा। गाड़ी का रास्ता गुफा से कुछ दूर आकर समाप्त हो गया था क्योंकि जाहिर सी बात थी कि गुफा के अंदर पैदल ही जाना था। 'बारातांग' सन् 2005 की महासुनामी के बाद समुद्र मे से दृश्यमान हुआ था और यहाँ (गुफा में) कैल्सियम और कोरल के मिलने से प्राकृतिक रूप से यह बहुत महत्वपूर्ण हो गया था।

गुफा के अंदर घूमने के बाद हम लोग बाहर निकले और हमें पहले गाड़ी और फिर नाव में सवार होकर पुनः पोर्ट ब्लेयर रवाना होना था। कुछ समय बाद हम द्वीप के दूसरी ओर पहुँच गए और पुलिस के साथ में आने तक इंतजार करने लगे। इसी बीच हमारी नजर वहाँ बसे हुए एक गाँव पर पड़ी। कुछ स्थानीय लोगों से बातचीत कर पता चला कि वह जगह प्रशासन ने 'जरावा' लोगों के लिए बसाई थी। उस गाँव में एक राशन की दुकान, विद्यालय, प्राथमिक चिकित्सालय और एक छोटी सी मार्केट भी बनाई गई थी। पीने के पानी की भी उचित व्यवस्था की गई थी। 'जरावा' लोग दिखने में एकदम आदिम नजर आते थे एवं आधुनिकीकरण से उनका दूर-दूर तक कोई लेना-देना नहीं है। कपड़ों के स्थान पर आज भी वे लोग पेड़ों की पत्तियों का प्रयोग करते हैं और इस प्रकार पहनते हैं कि स्त्री और पुरुष में भेद करना भी कठिन जान पड़ता है। जंगली सुअरों का शिकार करना व मछली पकड़ना ही उनके प्राथमिक व्यवसाय है। प्रशासन की तरफ से अनेक सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं लेकिन वे अपनी जीवन पद्धति को बदलना ही नहीं चाहते। शहरीकरण को और शहर के लोगों से मिलना-जुलना इन लोगों को कतई पसंद नहीं है। इन लोगों की अपनी कोई भाषा भी नहीं है। ये केवल इशारों से ही एक दूसरे से सम्प्रेषण करते हैं। यह बहुत ही आश्चर्य की बात है कि एक तरफ दुनिया कहाँ से कहाँ पहुँच रही है और इन लोगों की लिखित भाषा तक नहीं है।

न भाषा, न लिपि, न कपड़ा और न ही कोई अन्य सुख-सुविधा। बावजूद इसके वे बहुत खुश हैं। इसी प्रकार से सदियों से अपना जीवन जीते आ रहे हैं। जब बीमार पड़ते हैं तो जरूर सरकार की तरफ से प्रदान कराई जा रही सुविधाएं ले लेते हैं अन्यथा कोई अन्य संपर्क किसी बाह्य व्यक्ति से ये लोग नहीं करते हैं।

यात्रा पूरी होने के बाद हम तो अपने अपने घर, अपनी अपनी मंजिल पर वापस आ गए। लेकिन मेरे जेहन में वो यात्रा, वो 'जरावा' लोग, उस समय की यादें अभी तक मीठे अफ़साने की तरह एकदम ताज़ा हैं।

जय हिन्द, जय महाराष्ट्रा। ■

हीरे की शक्ल

हीरे की शक्ल में जो आए हो,
पत्थर जुबान क्यों बोलते हो ।
अपने निशां मिट्टी में खोकर,
ख़ुद मिट्टी से क्यों तौलते हो । ।

जो भी आरामगाह से दूर हुए,
वो घिसे और कोह-ए-नूर हुए ।
जो भी थक कर चूर-चूर हुए,
वो ही दुनिया में मशहूर हुए ।।

शमशीर नहीं बनती शमशीर,
हो छुपी म्यान के ही अन्दर।
जो खाक जहाँ की छान चुका,
सरताज वही, है वही सिकंदर।।

सुरूर-ए-नज़र में चढ़ जाओगे,
और शहँशाह फिर कहलाओगे।
न ख्वाबों की फिर कब्र कभी,
तुम ख्वाबों के महल बनाओगे।।

शक्ल जो हीरे की हो लाए,
फिर, पत्थर से न बोलोगे।
बख्त की मंज़िल पर आकर,
सुकून में खुदी के हो लोगे।।



▪ श्री आशुतोष 'अनिल' विश्नोई
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरा निश्चय !

मैं इकलौता दुनिया से कब तक आखिर लोहा लूँ
दूजा हो कोई शूरवीर तो बोलो उसको मौका दूँ।
धरती पर बढ़ रहा पाप है और बढ़ रहे दुराचारी
अच्छे लोग बने हैं चाकर, भ्रष्ट हुए हैं अधिकारी।
अति का अंत भला कब होगा इसका लेखा-जोखा लूँ
सोचा है मैंने भी अबकी बेईमानों को धोखा दूँ।

अपने अधिकारों का सबने जमकर दुरुपयोग किया,
सुख के सब साधन का तुमने मनमाना उपभोग किया।
ईश समझकर खुद को तुमने हमको बहुत सताया है,
बेमतलब बेतुका फ़ैसला सबको ख़ूब सुनाया है।
अभिमानी हाथी को जैसे चींटी धूल चटाती है,
वैसी ही किसी युक्ति से मैं मतवालों को चौंका दूँ।

दुःख है इसी बात का मुझको, क्यूँ संताप ने घेरा है
दुनिया उजली दिखती है पर कालों का यहाँ डेरा है।
आशा बीच निराशा भी है और दुविधा भी भारी है
ख़ुद से ख़ुद की जाने कैसी जंग भी मेरी जारी है।
नियम धरम सब तोड़के अब तो निर्णय मैं अनोखा लूँ
डूबने दूँ मैं मक्कारों को, सब साधु को नौका दूँ।

मेरे माथे पर हे भगवन् हाथ तुम्हारे दोनों धरो
पग पग साहस देना मुझको, इतना तुम उपकार करो।
है मेरा यह निश्चय प्रभुवर, दुनिया को चमकाना है
सच के बीज उगाने हैं और झूठों को दफनाना है।
दुनिया मानो एक इमारत, उसमें एक झरोखा दूँ
राहत की सांसें हो जिसमें हवा का मैं वो झोंका दूँ।



▪ श्री कुमार सौरभ
लेखापरीक्षक

हिंदी पखवाड़ा 2025 की झलकियाँ



हिंदी निबंध-लेखन प्रतियोगिता



हिंदी टिप्पण-आलेखन प्रतियोगिता





आशुभाषण प्रतियोगिता





गीत-गायन प्रतियोगिता





ज्ञान प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता





काव्य पाठ एवं मौखिक प्रतिभा-प्रदर्शन











काव्य पाठ एवं मौखिक प्रतिभा-प्रदर्शन









अंताक्षरी प्रतियोगिता





वर्ष 2025 – हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह
(30.09.2025)





आज का भारत



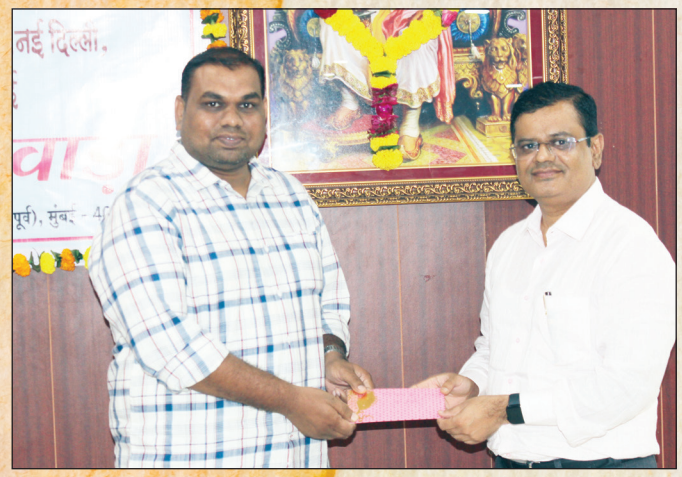
श्री हेमन्त चन्द
निजी सचिव (प्र.नि.ले.प)

सबके हक़ की बात करता है,
सबके साथ की बात करता है ।
ये आज का भारत है जनाब
सर झुका के नहीं, सर उठा के बात करता है ।।1।।

नयी ऊँचाइयों को छूने का ख्वाब देखता है
उन्हें पूरा करने की ठान लेता है ।
ये आज का भारत है जनाब
सर झुका के नहीं, सर उठा के बात करता है ।।2।।
हर रोज नए कीर्तिमान रचता है
भविष्य को उज्जवल बनाने पर काम करता है ।
ये आज का भारत है जनाब
सर झुका के नहीं, सर उठा के बात करता है ।।3।।

दोस्ती करता है, तो हर वक्त साथ देता है
दुश्मनी पर आये तो विनाश करता है ।
ये आज का भारत है जनाब
सर झुका के नहीं, सर उठा के बात करता है ।।4।।

मूल कार्य हिंदी में करने हेतु 4 कर्मचारियों को पुरस्कार 2025









मुंबई – कुछ अनजाने तथ्य



श्री राकेश कुमार सिंह
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

मुंबई आश्चर्यों से भरा शहर है, और मुंबई के बारे में ऐसे कई मजेदार तथ्य हैं जो इसे वाकई अनोखा बनाते हैं। क्या आप जानते हैं कि मुंबई शहर, सबसे बड़े उष्णकटिबंधीय जंगलों में से एक, संजय गांधी राष्ट्रीय उद्यान का घर है? इसमें प्रतिष्ठित डब्बावाले भी हैं, जो प्रभावशाली सटीकता दर के साथ प्रतिदिन 200,000 से अधिक लंचबॉक्स डिलीवर करते हैं। एक और आकर्षक पहलू मरीन ड्राइव है, जिसे अक्सर "क्वीन का हार" कहा जाता है, क्योंकि रात में देखने पर इसकी स्ट्रीट लाइट मोतियों की माला जैसी दिखती है। मुंबई के बारे में कुछ मजेदार तथ्य हैं जो इसके विविध और जीवंत चरित्र को उजागर करते हैं।

भारत का पहला पांच सितारा होटल – भारत का पहला पांच सितारा होटल, ताज महल पैलेस, मुंबई के कोलाबा में स्थित है, जो देश के आतिथ्य इतिहास में महत्वपूर्ण है। जमशेदजी टाटा द्वारा



कमीशन किया गया और 16 दिसंबर, 1903 को खोला गया, ताज महल पैलेस, आज भारत की सबसे बड़ी और बेहतरीन वैश्विक होटल कंपनी, ताज होटल्स रिसॉर्ट्स एंड पैलेस का हिस्सा है, जिसकी देश भर में और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संपत्तियां हैं। मुंबई के प्रतिष्ठित ताज महल पैलेस के बारे में एक दिलचस्प तथ्य यह है कि यह भारत के उन पहले होटलों में से एक था, जिसमें बिजली की सुविधा थी, जो होटल की दूरदर्शी सोच और आधुनिक दृष्टिकोण का प्रतीक है।

एशिया की सबसे बड़ी झुग्गी बस्ती - मुंबई एशिया की सबसे बड़ी झुग्गियों का घर है। धारावी एशिया की सबसे बड़ी झुग्गी बस्ती है , गरीब, जरूरतमंद और बेघर लोग जिसे अपना घर मानते हैं। कठोर परिस्थितियों के बावजूद, धारावी ने बेहद कुशल व्यक्तियों को जन्म दिया है जिन्होंने शहर और झुग्गी बस्ती को सम्मान दिलाया है। यहाँ के कुछ बेहद प्रतिभाशाली लोगों ने कई विश्व-व्यापी चैंपियनशिप में भाग लिया, उसे जीता और प्रशंसा प्राप्त की। अगर आप धारावी झुग्गी बस्ती का दौरा करते हैं, तो आपको पता चलेगा कि धारावी अरबों डॉलर का व्यवसाय क्यों लाती है।

मुंबई में कई यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हैं – मुंबई के बारे में रोचक तथ्यों में से एक यह है कि यह कई आकर्षक स्थलों के साथ एक लोकप्रिय यात्रा स्थल है। इसके तीन यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल शहर के मुख्य आकर्षणों में से एक हैं। इन धरोहर स्थलों में एलीफेंटा गुफाएँ, शिवाजी टर्मिनस (जिसे विक्टोरिया टर्मिनस भी कहा जाता है) और कई विक्टोरियन युग से प्रेरित डेको संरचनाएँ शामिल हैं। ये यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल हर साल हज़ारों पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जो शहर के समृद्ध सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व को दर्शाते हैं।

महिलाओं द्वारा पहली बार भारतीय रेलवे लाइन का निर्माण - 1863 में, एलिस ट्रेडवेल नामक एक अंग्रेज महिला ने मुंबई-पुणे रेलवे लाइन का निर्माण किया। मूल रूप से एक फोटोग्राफर और रेलवे ठेकेदार, उन्हें अंग्रेजी रेलवे ठेकेदार सोलोमन ट्रेडवेल की पत्नी के रूप में भी जाना जाता था। एलिस ट्रेडवेल ने भारत में रेलवे निर्माण व्यवसाय में प्रवेश करने वाली पहली महिला के रूप में इतिहास रच दिया। उनकी अभूतपूर्व उपलब्धि भारत के बुनियादी ढांचे के विकास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर थी। एलिस ट्रेडवेल की सफलता ने न केवल इंजीनियरिंग में महिलाओं के लिए मार्ग प्रशस्त किया, बल्कि औद्योगिक क्षेत्रों में लैंगिक समावेशिता में अग्रणी भूमिका निभाने में मुंबई की भूमिका को भी उजागर किया।

सर्वश्रेष्ठ आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन 'डब्बावाला' – मुंबई में डब्बावाले सौ साल से ज़्यादा समय से घर का बना खाना डिलीवर कर रहे हैं और वे अपने काम में सबसे बेहतरीन हैं। ज़्यादातर दफ़्तरों में काम करने वाले लोग घर का बना खाना पसंद करते हैं और डब्बावालों ने डिलीवरी सिस्टम को बेहतरीन बना दिया है। मुंबई के बारे में एक आश्चर्यजनक तथ्य डब्बावालों की असाधारण दक्षता है। एक सदी से भी ज़्यादा समय से वे पूरे मुंबई में घर का बना खाना डिलीवर कर रहे हैं। 5,000 से ज़्यादा डब्बावाले

हैं, जिन्हें 25 लोगों की 200 टीमों में बांटा गया है, जो पिक-अप से लेकर डिलीवरी तक का सारा काम संभालते हैं। फोर्ब्स ने उन्हें उनकी गुणवत्ता के लिए सिक्स सिग्मा रेटिंग भी दी है। डब्बावाले पूरे शहर में खाना डिलीवर करने और मुंबई में कई लोगों का दिल जीतने के लिए मशहूर हैं।

मुंबई में है दुनिया का सबसे महंगा घर – मुंबई में दुनिया का सबसे महंगा निजी आवास, एंटीलिया है, जिसका नाम एक पौराणिक द्वीप के नाम पर रखा गया है। यह 27 मंजिला गगनचुंबी हवेली भारत की सबसे मूल्यवान कंपनी के मालिक मुकेश अंबानी की है। इस घर में 168 कारों का गैरेज, 9 हाई-स्पीड लिफ्ट, एक स्पा, 50 सीटों वाला थिएटर, एक स्नो रूम और एक बॉलरूम है। 1 से 2 बिलियन अमरीकी डॉलर के बीच की कीमत वाला एंटीलिया अल्टामाउंट रोड पर स्थित है, जिसे बिलियनेयर्स रो के नाम से भी जाना जाता है।

एलीफेंटा गुफाओं - मुंबई बंदरगाह में एलीफेंटा द्वीप पर स्थित एलीफेंटा गुफाएँ, मुख्य रूप से हिंदू भगवान शिव को समर्पित गुफा मंदिरों का एक संग्रह हैं। यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल के रूप में नामित, ये गुफाएँ एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और सांस्कृतिक खजाना हैं। यह द्वीप, जिसे घारापुरी के नाम से भी जाना जाता है, महाराष्ट्र में मुंबई से लगभग 10 किलोमीटर पूर्व में स्थित है।

मुंबई में महालक्ष्मी धोबी घाट – मुंबई के बारे में रोचक तथ्यों में से एक यह है कि मुंबई में महालक्ष्मी धोबी घाट दुनिया का सबसे बड़ा ओपन-एयर लॉन्ड्री है। यहाँ, पूरे शहर से अनगिनत लॉन्ड्रीमैन कपड़े धोने आते हैं। किसी भी समय, 700 पत्थर धोने वाले प्लेटफ़ॉर्म पर 8,000 से ज़्यादा लॉन्ड्रीमैन काम करते देखे जा सकते हैं। 2011 में, इसने "एक ही स्थान पर एक साथ सबसे ज़्यादा लोगों द्वारा हाथ से कपड़े धोने" के लिए गिनीज़ वर्ल्ड रिकॉर्ड जीता।

जंगल बुक के लेखक का जन्मस्थान – "द जंगल बुक" की कहानी बहुत मशहूर है। हर कोई इसे पसंद करता है, और यह हर जगह प्रचलित है। नोबेल पुरस्कार विजेता रुडयार्ड किपलिंग ने यह रचना लिखी थी। दिलचस्प बात यह है कि उनका जन्म 30 दिसंबर, 1865 को मुंबई में हुआ था। भले ही लेखक का जन्मस्थान समय के साथ बदल गया हो, लेकिन मुंबई में जे.जे. स्कूल ऑफ़ आर्ट में अभी भी उनके मूल निवास के अवशेष मौजूद हैं।

मुंबई का नाम एक स्थानीय देवता के नाम पर रखा गया है – मुंबा की उत्पत्ति स्थानीय संरक्षक देवता, मुंबा देवी से हुई है। यह शब्द "मुंबा" को जोड़ता है, जो देवी का प्रतिनिधित्व करता है, और "आई" जिसका अर्थ है "माँ", जिसका अनुवाद "माँ मुंबा" होता है। शहर का नाम इसकी स्थानीय परंपराओं के लिए एक श्रद्धांजलि है, जो आधुनिक मुंबई पर इसकी जड़ों के स्थायी प्रभाव का प्रतीक है।

मुंबई भारत में सबसे पहले बस सेवा शुरू करने वाला शहर था – मुंबई अपनी व्यापक और कुशल परिवहन सेवाओं के लिए प्रसिद्ध है। शहर की बस सेवा, जो सबसे पहले यहाँ शुरू की गई थी, काफ़ी विकसित हुई है। आज, BEST बसें प्रतिदिन 5 मिलियन से ज़्यादा यात्रियों को ले जाती हैं, जो शहर की सार्वजनिक परिवहन प्रणाली में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है। यह विश्वसनीय सेवा मुंबई की व्यस्त, तेज़-तर्रार ज़िंदगी का अभिन्न अंग है, जो लाखों यात्रियों को ज़रूरी कनेक्टिविटी प्रदान करती है।

सात द्वीपों से बना मुंबई – अन्य शहरों के विपरीत, मुंबई सात द्वीपों से बना है, जिन्हें मिलाकर पूरा शहर बनाया गया है। इन द्वीपों में कोलाबा, माहिम, परेल, वर्ली, आइल ऑफ बॉम्बे, लिटिल कोलाबा और मझगांव शामिल हैं। समय के साथ, भूमि पुनर्ग्रहण ने इन द्वीपों का विस्तार किया है, जिससे मुंबई दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले और आर्थिक रूप से महत्वपूर्ण शहरों में से एक बन गया है।

फ्लेमिंगो – भांडुप और शिवरी के दलदल हर साल अक्टूबर से मार्च तक फ्लेमिंगो के प्रवास का गवाह बनते हैं। ये पक्षी दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से मुंबई आते हैं, जिससे फोटोग्राफरों और पक्षी प्रेमियों को देखने के लिए बहुत कुछ मिलता है। फ्लेमिंगो के बड़े झुंड एक मनोरम दृश्य बनाते हैं, जो शहर की हलचल से दूर एक शांतिपूर्ण पलायन प्रदान करते हैं। ये प्रवासी पक्षी क्षेत्र के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो आर्द्रभूमि (Wetland) के स्वास्थ्य में योगदान करते हैं।

पहले कार मालिक – टाटा के संस्थापक सर जमशेदजी टाटा भारत के पहले कार मालिक थे। उनसे पहले किसी को भी कार रखने का सौभाग्य नहीं मिला था। वे मुंबई के निवासी थे, जिससे मुंबई भारत में कार रखने वाला पहला शहर बन गया। सर जमशेदजी टाटा की कार, एक विंटेज मॉडल, देश के औद्योगिक विकास और आधुनिकीकरण की शुरुआत का प्रतीक थी।

प्राथमिक वैज्ञानिक संस्थान – मुंबई, भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र और परमाणु ऊर्जा विभाग जैसे उच्च मान्यता प्राप्त अनुसंधान संस्थानों का घर है। ये प्रतिष्ठित संस्थान वैज्ञानिक अनुसंधान में सबसे आगे हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

मुंबई एक बड़ा शहर है जिसके कई अलग-अलग हिस्से हैं। कुछ हिस्से समृद्ध हैं, जबकि अन्य गरीब हैं। मुंबई में, आप चीजों को करने के पुराने तरीकों के साथ नए विचारों को मिला हुआ देख सकते हैं। इस शहर का इतिहास बहुत पुराना है, लेकिन बहुत सारी आधुनिक चीजें हो रही हैं।

मुंबई अनोखी है, अद्भुत है, आश्चर्यों से भरी है, तभी तो मुंबई मेरी जान है। ■

कोलकाता: सिटी ऑफ जॉय



सुश्री रिम्पा मुख़र्जी
सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी

मेरा जन्म पश्चिम बंगाल के बर्धमान जिले में हुआ जो की कोलकाता से करीब सौ किलोमीटर की दुरी पर स्थित है , कोलकाता एक हेरिटेज शहर है जिसके कई प्रमुख पर्यटन स्थल हैं, जिन्हें वर्षो से सुव्यवस्थित और प्रवाहपूर्ण माना जाता आ रहा है, मैं उन्ही में से कुछ स्थलों के विषय में आपको अवगत कराना चाहती हूँ।

कोलकाता के प्रमुख पर्यटन स्थल

कोलकाता, जिसे पहले कलकत्ता के नाम से जाना जाता था, पश्चिम बंगाल की राजधानी है। यह शहर अपनी समृद्ध संस्कृति, ऐतिहासिक धरोहर, साहित्य, कला और स्वादिष्ट भोजन के लिए प्रसिद्ध है। इसे "सिटी ऑफ जॉय" भी कहा जाता है। कोलकाता में ऐसे अनेक पर्यटन स्थल हैं जो देश-विदेश के पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

विक्टोरिया मेमोरियल

विक्टोरिया मेमोरियल कोलकाता का सबसे प्रसिद्ध स्मारक है। यह सफेद संगमरमर से बना हुआ है और ब्रिटिश वास्तुकला का शानदार उदाहरण है। इसके अंदर एक संग्रहालय है, जहाँ ब्रिटिश काल से संबंधित चित्र, मूर्तियाँ और ऐतिहासिक वस्तुएँ रखी गई हैं। इसके चारों ओर सुंदर बगीचा है, जो पर्यटकों को बहुत पसंद आता है।

हावड़ा ब्रिज

हावड़ा ब्रिज हुगली नदी पर बना एक विशाल पुल है और कोलकाता की पहचान माना जाता है। यह दुनिया के सबसे व्यस्त पुलों में से एक है। रात के समय रोशनी से जगमगाता हुआ हावड़ा ब्रिज अत्यंत आकर्षक दृश्य प्रस्तुत करता है।

दक्षिणेश्वर काली मंदिर

दक्षिणेश्वर काली मंदिर एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थल है। यह मंदिर माँ काली को समर्पित है और हुगली नदी के तट पर स्थित है। यह स्थान स्वामी रामकृष्ण परमहंस से भी जुड़ा हुआ है। यहाँ देशभर से श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं।



बेलूर मठ

बेलूर मठ रामकृष्ण मिशन का मुख्यालय है। इसकी स्थापत्य कला में हिंदू, ईसाई और इस्लामी शैलियों का सुंदर मिश्रण देखने को मिलता है। यह स्थान आध्यात्मिक शांति और सादगी के लिए जाना जाता है।

इंडियन म्यूज़ियम

इंडियन म्यूज़ियम भारत का सबसे पुराना और सबसे बड़ा संग्रहालय है। यहाँ प्राचीन मूर्तियाँ, जीवाश्म, हथियार, चित्रकला और मिस्र की ममी तक देखने को मिलती है। इतिहास और विज्ञान में रुचि रखने वालों के लिए यह स्थान अत्यंत रोचक है।

साइंस सिटी

साइंस सिटी बच्चों और युवाओं के लिए एक आकर्षक पर्यटन स्थल है। यहाँ विज्ञान से जुड़े कई इंटरएक्टिव मॉडल, अंतरिक्ष थिएटर और डायनासोर पार्क हैं, जो ज्ञान के साथ-साथ मनोरंजन भी प्रदान करते हैं।

कालीघाट मंदिर

कालीघाट मंदिर कोलकाता का एक और प्रसिद्ध शक्तिपीठ है। यह माँ काली को समर्पित है और आस्था का प्रमुख केंद्र माना जाता है। यहाँ प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं।

प्रिंसेप घाट

प्रिंसेप घाट हुगली नदी के किनारे स्थित एक शांत और सुंदर स्थान है। यहाँ से नदी का दृश्य बहुत मनमोहक लगता है। शाम के समय लोग यहाँ टहलने और नौका विहार का आनंद लेने आते हैं।

कोलकाता की दुर्गा पूजा

दुर्गा पूजा के समय कोलकाता स्वयं को पूर्ण रूप से परिवर्तित करता हैं जो कि हर व्यक्ति को उनके जीवन काल में देखने का प्रयत्न करना चाहिए ।

निष्कर्ष

कोलकाता एक ऐसा शहर है जहाँ इतिहास, संस्कृति, धर्म और आधुनिकता का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। यहाँ के पर्यटन स्थल न केवल मनोरंजन प्रदान करते हैं, बल्कि भारत की समृद्ध विरासत से भी परिचय कराते हैं। इसलिए, कोलकाता पर्यटन के लिए एक आदर्श शहर है। ■

मेरे प्रेरणास्रोत : मेरे पिताजी



श्री कुमार सौरभ
लेखापरीक्षक

बीते दिनों जब मैंने समाचार में सुना कि एक आई.ए.एस. दम्पति करोड़ों रुपये के भ्रष्टाचार में लिप्त पाये गये हैं, वो भी तब जबकि दोनों ने मिलकर एथिक्स और इंटेग्रिटी पर एक पुस्तक लिख रखी हो और दम्पति में से एक तो अपने समय की टॉपर रही हो, तब मुझे मन ही मन में बड़ी कोफ़्त हुई। मेरे मन में वैचारिक उथल-पुथल मच गया, एक सवाल लगातार मेरे मस्तिष्क में कौंधने लगा कि कैसे कोई साधूगिरी की बात करके चोरों वाला काम कर सकता है....क्या उनको लाज, शर्म, हया कुछ का भी आभास नहीं होता होगा? क्या वे इसी दिन के लिए देश के सबसे प्रतिष्ठित एवं कठिनतम प्रतियोगिता में सफल होने की लालसा रखते होंगे? अगर ऐसा ही है, तब तो इतना बड़ा अफसर भगवान किसी को भी न बनने दें! मेरा व्यकितगत तौर पर मानना है कि भ्रष्टाचार की शुरुआत हमेशा शीर्ष स्तर से होती है; मसलन जब तक अधिकारी न चाहे, उसका मातहत कर्मचारी बेईमानी करने की हिम्मत कर ही नहीं सकता है। यदि किसी तरह जुर्रत कर भी ले, तो ईमानदार अधिकारी उसके पर ज़रुर कतर देगा, लेकिन यदि अधिकारी किसी कर्मचारी की कारगुजारी पर आँखें मूंद ले, तो समझा जाना चाहिए कि कर्मचारी के कृत्य में अधिकारी की भी साझेदारी है। अब सारे अधिकारी बेईमान भी नहीं होते, हमने देखा ही है कि कुछ तो अपनी ईमानदारी का तोहफ़ा निरंतर तबादले के रुप में भी पाते हैं। जहाँ के अधिकारी ईमानदार होते हैं, निश्चित है कि वहाँ कर्मचारी भी बेईमान नहीं ही होंगे (चाहे स्वेच्छा से हों या दबाव से हों)। लेकिन मैंने इसके उलट एक कर्मचारी ऐसा भी देखा है, जो अधिकांश बेईमानों से घिरा अखंड ईमानदार था। जी हाँ, मैं यहाँ बात कर रहा हूँ अपने पूज्य पिताजी की।

मेरे पिताजी कोई अफसर नहीं थे, बल्कि वे एक अदने से सरकारी मुलाजिम थे। उन्होंने पूरे 40 वर्ष सरकारी नौकरी की और उनकी खास उपलब्धि यह रही कि भ्रष्टाचार और कदाचार का एक भी आरोप संपूर्ण सेवा काल में उनके ऊपर नहीं लग पाया। एक बहुत ही प्रचलित कथन है – आदमी ईमानदार तभी तक है, जब तक उसे बेईमानी करने का मौका न मिले। परंतु, मेरा यह मानना है कि यह कथन दुर्भावना से प्रेरित एक बेतुका बयान मात्र है, मतलब कोई भी बेईमान नहीं चाहेगा कि वह अकेला बेईमान रहे, इसलिए सबको अपने गोरखधंधे में घसीटना चाहता है और इसी तरह के कथन से दूसरों को हमेशा भ्रम में रखता है। वह यही साबित करने को हमेशा तुला रहता है कि जैसे मनुष्य ग़लतियों का पुतला है, ठीक वैसे ही वह भ्रष्टाचार का भी पुतला होगा ही। ग़लती और भ्रष्टाचार में बहुत फ़र्क है, ग़लतियाँ अनजाने भी हो सकती हैं, मगर भ्रष्ट आचरण तो आपका चयन होता है, भ्रष्टाचार आप जानबूझकर करते हैं। तो मेरे पिताजी के मामले में मौका न मिलने वाला दृश्य ही नहीं था, बल्कि वे तो सिंचाई विभाग में नौकरी करते थे, जिसका काम नहर-निर्माण, कृषि कार्यकलाप हेतु तालाब, पोखर तथा अन्य संबंधित कार्य होते थे। अब आप सभी तो जानते ही होंगे कि जहाँ लोक-निर्माण की बात शामिल हो वहाँ हेराफेरी करना कितना सुलभ होता है, जानते हैं ना? तो मेरे पिताजी के पास मौके की कमी न थी, बल्कि वे तो नैसर्गिक रुप से सीधे और सरल स्वभाव के थे, अतः हेराफेरी उनके वश में क्या उनके सोच में भी कभी नहीं थी। पिताजी उनके कार्यालय के कई रोचक प्रसंग हमलोगों को सुनाया करते थे, उनमें से एक प्रसंग मुझे खासा याद है, क्योंकि उसे सुनाते वक्त पिताजी की वाणी से गर्व छलकता था। प्रसंग यह है कि, मेरे पिताजी तब वरिष्ठ लेखा लिपिक थे और साथ में कैशियर का भी पदभार संभालते थे, लिहाजा कार्यालय में उन्हें भी एक निजी कक्ष मिला हुआ था। कार्यालय में ठेकेदारों का आना-जाना लगा रहता था, ठेकेदारों का स्वभाव कैसा होता है इससे आप सब अंजान नहीं ही होंगे। वे सब रौबिले स्वभाव के थे और हथियार वगैरह भी रखते थे।

तो होता यह था कि ठेकेदार लोग जब भी किसी कार्य से अधिकारी के कक्ष में प्रवेश करते थे, तो अपना तमंचा भी संग लिए घुसते थे, और तो और उसे निकालकर अधिकारी के सामने मेज पर रख दिया करते थे। हालांकि, ऐसा करना काफी अशोभनीय था, लेकिन अधिकारी कर भी क्या सकते थे, वे ठेकेदारों के अनैतिक सेवक जो थे, अतः उनका ज़मीर मर चुका था। अधिकारी से वार्तालाप और चाय-नाश्ता का लाभ लेकर जब वे चलने को होते थे, तो उनके कक्ष से बाहर निकलकर अपना तमंचा अपने ड्राइवर को यह कहते हुए सौंप देते थे कि ज़रा कैशियर बाबू से मिलकर आते हैं, इसे उनके सामने नहीं ले जा सकते हैं। ठेकेदार का अधिकारी के कक्ष में हथियार ले जाना, तथा मेरे पिताजी के कक्ष में जाने से पहले हथियार अपने ड्राइवर को सौंप देना इस बात का परिचायक है कि वे मेरे पिताजी की कद्र किया करते थे। कद्र उनके ओहदे की वजह से नहीं, क्योंकि वे तो कोई अधिकारी थे नहीं, बल्कि कद्र इसलिए कि उन्होंने कभी भी बिना कारण चेक जारी करने में अड़ंगा नहीं लगाया, कभी ठेकेदार की एक चाय तक नहीं पी और उन्होंने कभी किसी की



चिरौरी नहीं की। पिताजी का अपना रुतबा था सब लोगों में।

आगे याद करुँ तो एक प्रसंग और भी है कि एक बार मेरे पिताजी के ऊपर पैसे खाने का आरोप उनके अधिकारी बेमतलबी लगा रहे थे। दरअसल, वे पिताजी के रुतबे से परेशान थे, इसलिए उन्हें बदनाम करने के लिए अनाप-शनाप आरोप लगा रहे थे। वैसे तो पिताजी शांत प्रवृत्ति के हैं, मगर जब बात स्वाभिमान पर आ जाये तो वे बड़े तल्ख हो जाते हैं। अधिकारी के बेबुनियाद आरोप के जवाब में उन्होंने कह दिया कि सर यदि आपका इल्जाम सही साबित हुआ तो आपकी जूती और मेरा सर, मगर इसके उलट हुआ तो फिर शर्त भी उलटा ही लागू होगा। यह सुनकर अधिकारी सकते में आ गये और आगे कुछ भी कह न पाये, इस तरह मामला शांत हुआ।

पिताजी स्वाभिमानी होने के साथ-साथ दरियादिल किस्म के इंसान भी हैं। अपने मातहत के प्रति वे हमेशा सहानुभूति तथा सहयोग भाव रखते थे। एक बार की घटना है कि उन्होंने एक चतुर्थ वर्ग कर्मचारी जो कि ट्रेजर गार्ड कहलाता था, उसके हाथों ट्रेजरी में चालान जमा करवाने और बैंक में ऑफिस का पैसा जमा करवाने भिजवाया था। ट्रेजर गार्ड चालान जमा करने के दौरान कैश से भरा हुआ झोला ट्रेजरी में ही भूल गया और बैंक आ गया, बैंक आकर उसे भान हुआ कि पैसे उसके पास हैं ही नहीं। वह हैरान परेशान वापस ट्रेजरी में गया, वहाँ खोजबीन की, मगर झोले का कुछ पता नहीं चल पाया, संभवतः किसी के हाथ लग गया हो और वह पैसे लेकर चंपत हो गया हो। वह बेचैन और मायूस होकर ऑफिस पहुँचा और पिताजी को सारी बात बतायी। पिताजी ने उसको कहा यह तो बड़ा गड़बड़ हो गया, अब यह बात मुझे साहब को बतानी पड़ेगी। वह रोनी-सी सूरत से पिताजी की तरफ देख रहा था और घबरा रहा था कि कहीं साहब उसकी नौकरी न खा जाएं। पिताजी ने उसको ढाढस बंधाया और कहा मैं देखता हूँ क्या किया जा सकता है, तुम चिंता मत करो।

मामला साहब के पास गया तो वे चिल्लाने लगे, कहने लगे ज़रुर इसी ने पैसे गायब किये होंगे और यहाँ आकर बातें बना रहा है, इतना लापरवाह कोई कैसे हो सकता है। उन्होंने फरमान सुनाया कि जितने भी पैसे खोये हैं, सब वही ट्रेजर गार्ड अपनी तनख्वाह से भरेगा। मैसेंजर फफक कर रो पड़ा, बोला कि साहब मेरे दो महीने की तनख्वाह जितनी रकम है, मैं और मेरा परिवार भला कैसे गुजारा करेगा फिर, कुछ कृपा कीजिए। साहब बोले – नाटक करने की कोई ज़रुरत नहीं है, पैसे तो तुम्हीं भरोगे, वरना अभी तुम्हारा सस्पेंशन ऑर्डर निकलवाता हूँ। पिताजी ने बीच-बचाव करते हुए कहा कि सर कैशियर होने के नाते मेरी भी ज़िम्मेदारी बनती है कि मुझे स्वयं भी इसके साथ बैंक जाना चाहिए था, मगर यह भरोसेमंद आदमी है और मैं भी किसी और काम में व्यस्त था, इसलिए इसको अकेला भेज दिया। पिताजी ने मैसेंजर से कहा – तुम 50 प्रतिशत रकम भर देना, बाकि के 50 मैं भर दूंगा। अब साहब यह सुनकर थोड़े शर्मिंदा हुए और बोले कि रहने दीजिए कैशियर बाबू, कुछ पैसे हम भी मदद कर देंगे, इसको 50 प्रतिशत पूरे नहीं भरने पड़ेंगे।

तो ऐसे हैं मेरे पिताजी, निश्चल और निर्भीक। उन्होंने पैसे तो नहीं बनाए, मगर अपने सहकर्मियों से मधुर संबंध ज़रुर बनाए, सबका सम्मान पाया और स्नेह भी। तो क्या हुआ कि वे अपने वेतन से एक अदद मकान तक नहीं बना पाए, पूरी नौकरी किराये के घर में रहे, मगर अपने नियत वेतन से पूरा परिवार बड़े शानदार ढंग से चलाया, अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा और संस्कार दिये, रिश्वत की राशि को ठुकरा कर जीपीएफ से पैसे निकाल निकालकर अपनी बेटियों की शादी की।

आज उन्हें सेवानिवृत हुए तकरीबन 9 वर्ष हो गये हैं और मुझे जब भी मौका मिलता है, मैं उनसे और भी प्रेरक प्रसंग सुनता रहता हूँ। मुझे गर्व है कि मैं ऐसे ईमानदार और साफ छवि वाले इंसान का पुत्र हूँ। एक पिता कि लिए वह क्षण गौरव का होता है, जब उनका पुत्र उनसे ज़्यादा तरक्की और शोहरत पाये, किंतु, मेरी तो आकांक्षा इतनी सी है कि मैं पहले उनके बराबर बन पाऊं, उनके जितना सम्मान और स्नेह प्राप्त कर पाऊं। इसके लिए आवश्यक यह होगा कि मैं भी उनके पद-चिन्हों पर चलूँ। मेरे पेशेवर जीवन में मेरे लिए पिताजी से बड़ा प्रेरणास्रोत और कोई नहीं हो सकता। ईश्वर करे उनका साथ और आशीर्वाद दोनों मेरे साथ हमेशा बना रहे। ■

मेरी माँ



सुश्री ट्यूलिप सिंह
पुत्री सुश्री मधु सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मुझे हर समय प्यार करती
मेरी माँ ।
मुझे सुबह नींद से जगाती
मेरी माँ ।
मुझे रात को कहानी सुनाती
मेरी माँ ।
मुझे आँचल मे सुलाती
मेर माँ ।
मुझे रोज दुलार करती
मेरी माँ ।
जिसकी ममता की कोई सीमा नहीं वह है
मेरी माँ ।
दिल से सच्ची मिसरी जैसी
मेरी माँ ।
सारे जग से न्यारी
मेरी माँ ।
सारे मेरे नखरे उठाती
मेरी माँ ।
शांत नदी की धारा सी
मेरी माँ ।
ममता की छाँव सी
मेरी माँ ।
रात भर माथे पर हथेली रख कर जागती
मेरी माँ ।
अब भी बुखार हथेली से मापती
मेरी माँ ।
शीतल पवन के झोंकों सी
मेरी माँ ।
खुद में पूरा संसार है
मेरी माँ ।
हमे दिए ईश्वर के अनुपम उपहार सी
मेरी माँ । ■

स्त्री का फर्ज है



सुश्री बिना कुमारी राय
कनिष्ठ अनुवादक

सूरज की दस्तक से पहले ही,
उसके हाथों की चूड़ियाँ खनकती हैं,
नींद की चादर छोड़, वह रसोई की आग में सुलगती है।
अपनों के लिए नाश्ता, और खुद के लिए बस भागदौड़ चुनती है,
वह आधी नींद में भी, घर के हर सदस्य की ज़रूरतें सुनती है।
तैयार होकर जब दफ्तर की चौखट पर पाँव रखती है,
पीछे छूट गए बीमार बच्चे की फिक्र, उसके मन में कसकती है।

एक हाथ में 'प्रोजेक्ट रिपोर्ट', दूसरे में घर का हिसाब होता है,
उसकी मुकम्मल ज़िंदगी का, खुद उसके पास कहाँ जवाब होता है?

बस की भीड़ में किसी का धक्का, या राह चलते वो गंदी नज़रें,
वह सब पी जाती है, ताकि सुरक्षित रहे उसकी अपनी डगरें।
काम की मेज़ पर फाइलों का अंबार,
और जेहन में कल की सब्जी का ख्याल,
अजीब कशमकश है यह, हर दिन एक नया और पेचीदा सवाल।

वह दोहरी भूमिकाओं के तराज़ू पर, खुद को बराबर तौलती है,
पर अपनी घुटन का दरवाज़ा, वह शायद ही कभी खोलती है।
लोग कहते हैं वह आज़ाद है, क्योंकि वह अब पैसा कमाती है,
पर क्या कोई पूछता है कि वह चैन से कितनी देर सो पाती है?
उसकी तरक्की पर अक्सर दबी ज़ुबान से 'तंज' कसे जाते हैं,
पर उसकी रातों की मेहनत के निशाँ, सबको कहाँ नज़र आते हैं?
शाम को घर लौटते वक्त,
वह राशन की थैली और थकान साथ लाती है,

जूते उतारते ही सबसे पहले, वह रसोई की तरफ भागती है।
वह भारतीय नारी, जो संघर्ष को भी एक गहने की तरह पहनती है,
उसके त्याग की गाथा, शायद ही कभी कोई स्याही कहती है।
'स्त्री का फर्ज है'—यह कहकर उसे आसमान पर बिठाया गया,
फिर उसी ऊँचाई से जिम्मेदारियों का बोझ उस पर इस कदर गिराया गया।
उसे महानता के भ्रम में कुछ इस तरह उलझाया गया,
कि खुद के शोषण को पहचानना भी उसके लिए मुमकिन न रहा। ■

बजट 2026, मुझे क्या मिला?



श्री हेमन्त चन्द
डाटा एंट्री ऑपरेटर

किसान



- ग्रामीण इलाकों में एक जिला-एक उत्पाद योजना को मजबूत करेंगे। प्रोडक्शन, ट्रेनिंग और मार्केट बढ़ेंगे।
- खादी और हथकरघा को मजबूत करने के लिए महात्मा गांधी ग्राम स्वराज पहल शुरू होगी।
- नारियल उगाने वाले राज्यों में बेकार पेड़ों की जगह नई किस्म के पौधे लगाए जाएंगे।
- 2030 तक काजू और कोको को प्रीमियम ग्लोबल ब्रांड बनाने के लिए मदद।
- चंदन के पेड़ों और लकड़ी के लिए विशेष योजना।
- रेशम, ऊन और जूट फाइबरों में आत्मनिर्भरता के लिए राष्ट्रीय फाइबर योजना लाई जाएगी।
- पारंपरिक क्लस्टरों के आधुनिकीकरण के लिए वस्त्र विस्तार एवं रोजगार योजना आएगी।
- बुनकरों और कारीगरों की मदद के लिए राष्ट्रीय हथकरघा और हस्तशिल्प कार्यक्रम लाए जाएंगे।
- किसानों के लिए AI टूल- भारत-VISTAAR कार्यक्रम की शुरुआत होगी। ये किसानों की उत्पादकता बढ़ाएगा।
- मत्स्य पालन के लिए 500 जलाशयों और अमृत सरोवरों का इंटीग्रेटेड डेवलपमेंट किया जाएगा।
- पशुपालन क्षेत्र के लिए लोन-आधारित सब्सिडी कार्यक्रम शुरू होंगे।

व्यापारी

- भविष्य के चैंपियन बनाने के लिए 10,000 करोड़ रु. का एमएसएमई ग्रोथ फंड बनेगा।
- देश में मेगा टेक्सटाइल पार्क बनाए जाएंगे।
- एमएसएमई से सरकारी खरीद को बढ़ाया जाएगा।
- टेक्सटाइल सेक्टर के लिए 3 स्कीम- नेशनल फाइबर स्कीम, मैन मेड फाइबर और एडवांस्ड फाइबर आएंगी।
- नेशनल हैंडलूम पॉलिसी से कारीगरों को प्रोत्साहन और मदद मिलेगी।
- प्राइवेट डेवलपर्स को इन्फ्रास्ट्रक्चर रिस्क गारंटी फंड - सरकार पार्शियल गारंटी देगी।
- लिक्वीडिटी सपोर्ट के लिए ट्रांजेक्शन सेटलमेंट प्रोग्राम, क्रेडिट गारंटी सपोर्ट मैकेनिज्म, GEM को ट्रेड से लिंक करना, एसेट बेस्ड सिक्योरिटी
- प्रोफेशनल सपोर्ट - शॉर्ट टर्म मॉड्युलर कोर्स डिजाइन किए जाएंगे। टियर-2 और 3 तक ट्रेनिंग मिलेगी।
- वाराणसी और पटना में इंटरनल वाटरवेज डेवलप किया जाएंगे।
- देश में एम्स के स्तर के 5 नए आयुर्वेद संस्थान बनाए जाएंगे।
- जामनगर में WHO की मदद से ट्रेडिशनल मेडिसिन सेंटर खोला जाएगा।
- शेयर मार्केट से जुड़ा सिक्योरिटीज ट्रांजेक्शन टैक्स (STT) को 0.02% से बढ़ाकर 0.05% किया गया।



मध्यम वर्ग



- 2026 के बजट में इनकम टैक्स स्लैब में कोई बदलाव नहीं।
- मोटर एक्सीडेंट क्लेम्स ट्रिब्यूनल के फैसले से मिला ब्याज टैक्स मुक्त होगा।
- मोबाइल, ईवी स्कूटर, ईवी कारें और सोलर से जुड़ीं चीजें सस्ती होंगी।
- कैंसर की 17 दवाइयों सस्ती होंगी, कस्टम ड्यूटी नहीं लगेगी।
- 7 दुर्लभ बीमारियों के लिए विदेश से मंगाई जाने वाली दवाएं भी सस्ती होंगी।
- 5 लाख से ज्यादा आबादी वाले टियर-2 और 3 के शहरों के डेवलपमेंट के लिए 11.2 लाख करोड़।
- अमृत योजना में टियर 2 और टियर 3 शहरों में इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास तेज होगा।
- बड़े शहरों में ज्यादा मूल्य के म्यूनिसिपल बॉन्ड के बढ़ावा देने पर जोर होगा।
- छोटे-मध्यम कस्बों के लिए 200 करोड़ रुपये तक के बॉन्ड वाली अमृत योजना जारी रहेगी।
- शेयर मार्केट से जुड़ा सिक्योरिटीज ट्रांजेक्शन टैक्स (STT) को 0.02% से बढ़ाकर 0.05% किया गया।

नौकरीपेशा

- बजट में इनकम टैक्स में कोई नई छूट नहीं। सभी स्लैब में कोई चेंज नहीं।
- नया इनकम टैक्स 1 अप्रैल 2026 से लागू होगा। आसान फॉर्म मिलेगा।
- रिवाइज्ड रिटर्न फाइल करने के लिए 3 महीने का ज्यादा समय दिया।
- अब 31 दिसंबर के बदले 31 मार्च तक रिवाइज्ड रिटर्न फाइल कर सकते हैं।
- पढ़ाई और इलाज के लिए विदेश पैसे भेजने पर अब कम टैक्स कलेक्शन एट सोर्स (TCS) लगेगा।
- विदेशी टूर पैकेज पर TCS रेट को घटाकर 2% किया गया है।
- एम्पलाईज हायरिंग सर्विस पर 1 से 2% टैक्स।
- अचल संपत्ति बेचने पर टीडीएस के लिए टैन की जगह पैन बेस्ड चालान भरना होगा।
- विदेशों में कमाई की घोषणा के लिए - वन टाइम सिक्स मंथ फॉरेन असेट्स डिस्क्लोज स्कीम।
- NRI को विदेश में कमाई रकम भारत में निवेश पर 5 साल के लिए इनकम टैक्स में राहत, शर्तों के साथ।
- शेयर मार्केट से जुड़ा सिक्योरिटीज ट्रांजेक्शन टैक्स (STT) 0.02% से बढ़ाकर 0.05% किया गया।
- भारत में पांच साल रहने वाले विदेशियों की देश से बाहर की गई कमाई टैक्स-फ्री।



युवा

- एआई टूल- भारत-VISTAAR कार्यक्रम की शुरुआत होगी।
- नेशनल डेस्टिनेशन डिजिटल नॉलेज ग्रिड स्थापित होगी।
- गेमिंग, कॉमिक जैसे सेक्टर में 2030 तक 20 लाख पेशेवरों की जरूरत होगी।
- AVGC कंटेंट क्रिएटर लैब स्थापित होंगी। पूर्वी भारत में नए राष्ट्रीय डिजाइन संस्थान की स्थापना होगी।
- पांच साल में एक लाख स्पेशलिस्ट हेल्थकेयर प्रोफेशनल तैयार होंगे।
- 1.5 लाख केयर गिवर्स को ट्रेनिंग दी जाएगी।

- स्वास्थ्य पेशेवर बनाने वाले संस्थानों को अपग्रेड किया जाएगा।
- रेडियोलॉजी, एनेस्थीशिया जैसे क्षेत्रों पर ध्यान दिया जाएगा।
- 800 जिलों में लड़कियों के लिए हॉस्टल बनेंगे। हर जिले में एक हॉस्टल बनाया जाएगा।
- 15,000 मिडिल स्कूलों और 500 कॉलेजों में एवीजीसी कंटेंट क्रिएटर लैब् बनेगी।
- 20 प्रसिद्ध पर्यटन स्थलों पर 10 हजार गाइड्स के कौशल बढ़ाने की योजना शुरू होगी।
- खेलो इंडिया मिशन की स्थापना होगी। नए प्रशिक्षण केंद्र बनाए जाएँगे।
- हिमाचल, उत्तराखंड और जम्मू कश्मीर, अराक्कू घाटी में माउंटेन ट्रेल्स बनेंगे।
- ओडिशा, कर्नाटक, केरल में टर्टल ट्रेल्स बनेंगे।

कॉर्पोरेट

- देश का डिफेंस बजट 6.81 लाख करोड़ से बढ़ाकर 7.8 लाख करोड़ रुपए किया गया।
- 7 हाईस्पीड रेल कॉरिडोर बनेंगे - मुंबई से पुणे, पुणे से हैदराबाद, हैदराबाद से बेंगलुरु, हैदराबाद से चेन्नई, चेन्नई से बेंगलुरु, दिल्ली से वाराणसी, वाराणसी से सिलीगुड़ी।
- ओडिशा, केरल, आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु में रेयर-अर्थ कॉरिडोर स्थापित किए जाएंगे।
- 10,000 करोड़ रुपए के निवेश के साथ 'बायो-फार्मा शक्ति' योजना शुरू होगी, तीन नए संस्थान खुलेंगे।
- साइंटिफिक रिव्यू के लिए 1000 से ज्यादा क्लीनिकल साइट्स बनाए जाएंगे।
- सेमीकंडक्टर मिशन - प्रोडक्शन और इंडियन आईपी बनाने, सप्लाई चेन बनाने के लिए प्रावधान।
- चिप मैन्युफैक्चरिंग के लिए भारत अपना सेमीकंडक्टर मिशन ISM 2.0 लॉन्च करेगा।
- मोबाइल और अन्य इलेक्ट्रॉनिक्स पार्ट्स के लिए बजट बढ़ाकर 40,000 करोड़ रुपए किया गया।
- प्राइवेट डेवलपर्स को इन्फ्रास्ट्रक्चर रिस्क गारंटी फंड - सरकार पार्शियल गारंटी देगी।
- कार्गो डेडिकेटेड फ्रेड कॉरिडोर - पूर्व में दंकुनी से पश्चिम में सूरत तक- पोर्ट को जोड़ने के लिए भी स्कीम।
- विदेशों में कमाई की घोषणा के लिए - वन टाइम सिक्स मंथ फॉरेन असेट्स डिस्क्लोज स्कीम।
- कर्जदारों को आंशिक क्रेडिट गारंटी के लिए इन्फ्रास्ट्रक्चर रिस्क गारंटी फंड बनेगा।
- भारत में बने डेटा सेंटर इस्तेमाल करने वाली विदेशी क्लाउड कंपनियों को 2047 तक टैक्स में छूट।
- देशभर में 4000 नई ई-बसें चलाई जाएंगी।

महिलाएं



- लखपति दीदी प्रोग्राम - सेल्फ हेल्प उद्यमियों को इनोवेटिव फाइनेंसिंग के जरिए मदद मिलेगी।
- ग्रामीण महिला उद्यमों के लिए स्व-सहायता उद्यम यानी शी-मार्ट्स की शुरुआत होगी।

बुजुर्ग

- 7 गंभीर रोगों की दवाएं सस्ती होंगी। शुगर, कैंसर की 17 दवाओं के दाम घटेंगे।
- देश में एम्स के स्तर के 3 नए आयुर्वेद संस्थान बनाए जाएंगे।
- दिव्यांग सहारा योजना के तहत ट्रेनिंग और सपोर्ट मिलेगा।
- मानसिक स्वास्थ्य पर ध्यान देते हुए NIMHANS 2.0 की स्थापना की जाएगी।
- पूर्वोत्तर के 5 राज्यों - अरुणाचल, असम, सिक्किम, मिजोरम और त्रिपुरा में नए बौद्ध सर्किट बनेंगे।
- भारतीय योग को दुनियाभर में फैलाने के लिए बढ़ावा दिया जाएगा, क्वालिटी आयुर्वेदिक प्रोडक्ट के एक्सपोर्ट को बढ़ावा मिलेगा। ■



ट्रेड यूनियन / कर्मचारी यूनियन



श्री राकेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

ट्रेड यूनियन / कर्मचारी यूनियन ऐसे लोगों का समूह है जिनका एक साझा लक्ष्य होता है कि वे अपने काम करने की परिस्थितियों को बेहतर बनाने के लिए मिलकर काम करें। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) ने लंबे समय से माना है कि ट्रेड यूनियन किसी देश की आधुनिक औद्योगिक प्रणाली का एक अनिवार्य हिस्सा हैं। 1918 तक, भारत में पहला संगठित ट्रेड यूनियन, जिसे मद्रास लेबर यूनियन के नाम से जाना जाता था, स्थापित हो चुका था। भारत में, कई ट्रेड यूनियन अपंजीकृत हैं और कई क्षेत्रों में फैले हुए हैं। रोज़गार में वृद्धि के साथ ट्रेड यूनियन-प्रतिनिधित्व वाले कर्मचारियों के पास विकास की बहुत गुंजाइश है।

भारत में ट्रेड यूनियनों का इतिहास

भारत का ट्रेड यूनियन आंदोलन और भारत में ट्रेड यूनियन का इतिहास देश के बड़े पैमाने पर विनिर्माण क्षेत्र के साथ-साथ विकसित हुआ है, जैसा कि कई अन्य देशों में हुआ है। विशाल औद्योगिक इकाइयों के विकास ने कर्मचारियों की कार्य और जीवन स्थितियों को नाटकीय रूप से बदल दिया है, जिसके परिणामस्वरूप कई नए और जटिल मुद्दे सामने आए हैं। मशीनरी, नई उत्पादन लाइनों और बड़े शहरों में उद्यमों के संकेन्द्रण की शुरूआत के कारण औद्योगिक समाज पूंजीपतियों और मजदूरों के बीच विभाजित हो गए। मजदूरों का क्रूरतापूर्वक शोषण किया गया और उन्हें बिना किसी सहारे और संगठन के भयावह परिस्थितियों में काम करने के लिए मजबूर किया गया। व्यक्तिगत आपत्तियों का नियोक्ताओं पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, इसलिए उन्होंने एकजुट होकर अपने नियोक्ताओं के अमानवीय व्यवहार से खुद को बचाने के लिए एक संघ बनाया। उन्होंने कर्मचारी संघ बनाए और बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन आयोजित किए, जिससे भारत में ट्रेड यूनियनों की उत्पत्ति हुई।

भारत में ट्रेड यूनियनों का विकास

भारत में ट्रेड यूनियनों को अब एक कानूनी दर्जा मिल गया है, न कि सिर्फ तदर्थ या हड़ताल समितियां। अब वे आधुनिक सभ्यता के स्थायी अंग के रूप में खुद को स्थापित करने में सफल हो गए हैं। केंद्रीय यूनियन फेडरेशनों के सहयोग से यूनियनों ने अपने मूल मूल्यों और विचारधाराओं को स्थापित किया है और साथ ही अपने सदस्यों को उद्देश्य की भावना भी दी है। अपनी उच्च प्रमुखता के कारण, कर्मचारी संघ अब सार्वजनिक नीति और श्रम कानूनों को



प्रभावित करने की स्थिति में हैं। कर्मचारी और प्रबंधन आपसी संवाद के लिए प्रभावी तंत्र विकसित करके विभिन्न चुनौतियों पर एक साथ काम करने में सक्षम हैं।

यूनियनों के लाभ

कर्मचारी संघ ऐसे संगठन हैं जो सदस्यों की कार्य स्थितियों को बेहतर बनाने के साथ-साथ उनकी ओर से सामूहिक रूप से बातचीत करने के लिए बनाए जाते हैं। कर्मचारी संघ विनियमन, कानून और अंततः श्रम आर्थिक नीतियों के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

1. बेहतर वेतन

यूनियनों का संघबद्ध और गैर-संघबद्ध दोनों प्रकार के कर्मचारियों के मुआवज़े और कार्य जीवन पर बहुत बड़ा प्रभाव पड़ता है। यूनियनें मज़दूरी असमानता को कम करती हैं क्योंकि वे उच्च-मज़दूरी वाले कर्मचारियों की तुलना में निम्न और मध्यम-मज़दूरी वाले कर्मचारियों के लिए अधिक मज़दूरी बढ़ाती हैं, मज़बूत यूनियनें एक वेतन मानक निर्धारित करती हैं जिसका गैर-संघबद्ध नियोक्ता पालन करते हैं। संघबद्ध कर्मचारियों के लिए सबसे व्यापक लाभ फ़्रिंज लाभों में है। यूनियन वाले कर्मचारियों को गैर-यूनियन वाले कर्मचारियों की तुलना में ज़्यादा उदार स्वास्थ्य लाभ मिलते हैं। यूनियन वाले कर्मचारियों को बेहतर पेंशन मिलती है। और यूनियन वाले कर्मचारियों को ज़्यादा भुगतान वाली छुट्टियाँ, अवकाश और बीमार छुट्टी मिलती है।

2. नौकरी की सुरक्षा

संघ का समर्थन करने के मुख्य कारणों में से एक नौकरी की सुरक्षा है। संघ के माध्यम से प्रदान की गई नौकरी की सुरक्षा कर्मचारियों के आर्थिक अस्तित्व के लिए महत्वपूर्ण है। कर्मचारी संघों के कारण कर्मचारियों को नौकरी से निकालना एक मुश्किल कार्य हो गया है , अतएव संघ कर्मचारियों की नौकरी की सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान है।

3. बेहतर कार्य स्थितियां

जब लोग संगठित होते हैं तो वे अपनी मदद खुद करते हैं। नियोक्ताओं की पहचान प्रबंधन से होती है, न कि श्रम से, इस तथ्य से कि, अन्य चीजें समान होने पर, निवेशक एक गैर-संघीय कंपनी को एक संघीकृत कंपनी से अधिक पसंद करते हैं। यही कारण है कि नियोक्ता श्रम संगठनों का विरोध करते हैं। नियोक्ता अपने कर्मचारियों पर लागू करने के लिए औपचारिक या अनौपचारिक नियम स्थापित करते हैं, और वे श्रमिकों को प्रक्रिया का अधिक हिस्सा बनाने के लिए नियमों को बदलने के प्रयासों का विरोध करते हैं। एक कर्मचारी को तब तक 'वेतनभोगी' नहीं बनाया जा सकता जब तक कि उन्हें ऊपर सूचीबद्ध कीमतों में से कम से कम एक के आधार पर वेतन न दिया जाए। कर्मचारी संगठन अपने सदस्यों के लिए बेहतर कार्य की स्थितियां बनाने का कार्य कराती हैं और उनमे सुधार की प्रक्रिया को निरंतर जारी रखते हैं।

4. सामूहिक सौदेबाजी

लोकतांत्रिक समाज में, व्यक्ति को धार्मिक स्वतंत्रता, भाषण, सभा और कानून के तहत उचित प्रक्रिया जैसे बुनियादी अधिकार प्राप्त होते हैं। लोकतांत्रिक कार्यस्थल में, ये अधिकार भी मौजूद होते हैं। लोकतांत्रिक तरीके से संचालित कार्यस्थल कर्मचारियों को वेतन और कार्य स्थितियों पर चर्चा करने की स्वतंत्रता प्रदान करता है, जो बर्खास्तगी या अन्य प्रबंधकीय प्रतिशोध की धमकियों से मुक्त होते हैं। एक श्रम समझौता प्रबंधन और कर्मचारियों दोनों को एक समान खेल के मैदान पर रखता है, जिससे रोजगार संबंध समतल हो जाते हैं। अपेक्षाकृत समान शक्ति वाले पक्षों के बीच सामूहिक सौदेबाजी कर्मचारियों को उन निर्णयों में भाग लेने का अधिकार प्रदान करती है जो उनके जीवन को प्रभावित करते हैं। नीति-निर्माण प्रक्रिया में सक्रिय एक संघ अपने सदस्यों को अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य सेवा और पर्यावरण के मुद्दों पर एक मजबूत आवाज प्रदान करता है।

5. अनुबंध पर बातचीत

यूनियन के बिना, कर्मचारियों को वेतन, स्वास्थ्य सेवा या अन्य मुद्दों को संबोधित करने के लिए अपने नियोक्ताओं से व्यक्तिगत रूप से या छोटे समूहों में बात करनी पड़ती है। यूनियन कर्मचारियों को सामूहिक आवाज़ उठाने का अवसर प्रदान करती है। काम करने की स्थितियाँ तनाव का कारण और परिणाम दोनों हैं, फिर भी लोगों



को जीवित रहने के लिए अपनी नौकरी की आवश्यकता होती है, और यह हताशा लोगों को ऐसी नौकरी स्वीकार करने के लिए प्रेरित करती है जहाँ उन्हें अपने परिवारों को खिलाने के लिए घृणित कार्य स्थितियों से गुजरना पड़ता है। किसी कार्यस्थल पर यूनियन में शामिल होकर, प्रत्येक व्यक्ति कार्य स्थितियों और अन्य मुद्दों पर विचार कर सकता है, और फिर वे उन मुद्दों के समाधान के लिए एक अनुबंध पर बातचीत कर सकते हैं।

6. विवादों का समाधान

अगर आपको लगता है कि कंपनी प्रबंधन ने आपके साथ गलत व्यवहार किया है, तो आप अपने कर्मचारी संघ के माध्यम से शिकायत दर्ज कर सकते हैं। शिकायत आपकी नौकरी या आपके कार्यस्थल से संबंधित शिकायत या समस्या है। उदाहरण के लिए, यदि आपकी कंपनी रोजगार कानूनों का पालन नहीं कर रही है, तो आपको शिकायत हो सकती है। ये कानून श्रमिकों की रक्षा करते हैं, और इनमें न्यूनतम वेतन और ओवरटाइम भुगतान कानून, भेदभाव और उत्पीड़न को प्रतिबंधित करने वाले कानून और भोजन और आराम अवकाश की आवश्यकता वाले कानून शामिल हैं। यदि आपको कोई शिकायत है, तो आपको एक निश्चित अवधि के भीतर अपने कर्मचारी संघ को सूचित करना चाहिए। अपने कर्मचारी संघ के माध्यम से शिकायत दर्ज करने से आपको अपने मुद्दे को हल करने के लिए संसाधनों और सलाह तक पहुँच मिलती है। कर्मचारी आमतौर पर हर महीने अपने वेतन का एक हिस्सा यूनियन शुल्क के रूप में अपने संघ को देते हैं, और उन्हें पता हो सकता है कि संघ के पास उनके मुद्दे के लिए लड़ने के लिए सबसे उपयुक्त विशेषज्ञ हैं।

7. भेदभाव विरोधी

कर्मचारियों को एक साधारण कारण से यूनियनों की बहुत आवश्यकता है - कार्यस्थल पर सुरक्षा प्रदान करना। जबकि कर्मचारी जो यूनियनों के सदस्य हैं, उन्हें उम्मीद है कि उन्हें वास्तव में कभी प्रतिनिधित्व की आवश्यकता नहीं होगी, उन्हें यह जानकर बहुत आराम मिलता है कि यूनियन प्रतिनिधित्व हमेशा उपलब्ध है। कुछ सरकारों द्वारा मानवाधिकार कानून को नाटकीय रूप से कमजोर या समाप्त कर दिया गया है, और नियोक्ता अपने कर्मचारियों की जरूरतों और भावनाओं के प्रति बहुत असंवेदनशील हैं एक अच्छा यूनियन प्रतिनिधि अच्छी सलाह, समर्थन देता है, और किसी सदस्य के साथ गलत व्यवहार नहीं होने देगा। जिन श्रमिकों को यूनियनों की सबसे अधिक आवश्यकता होती है, वे वे होते हैं जिनके काम में दुर्व्यवहार का उच्च जोखिम होता है, चाहे वह नियोक्ता द्वारा अनुशासन या बर्खास्तगी के रूप में हो या अन्य कर्मचारियों द्वारा कार्यस्थल पर उत्पीड़न और/या भेदभाव के रूप में हो। कार्यस्थल पर दुर्व्यवहार के जोखिम के संपर्क में आने वाले श्रमिकों के सामान्य वर्ग हैंः 1) महिलाएँ 2) दृश्यमान अल्पसंख्यक, 3) स्थायी रूप से विकलांग, और 4) दीर्घकालिक रूप से बीमार या घायल, इन श्रमिकों को कार्यस्थल सुरक्षा, प्रतिनिधित्व और सहायता प्रदान करने के लिए यूनियनों की आवश्यकता अन्य यूनियन सदस्यों की तुलना में कई गुना अधिक होती है।

हर एक संगठन की तरह कर्मचारी संगठनों की भी कुछ कमियां हैं , जो निम्न हैं -

1. यूनियन नेताओं का लचर रवैया :

यूनियन के नेता अपने आप को सबसे अलग और विशेष समझते हैं और उनका मुख्य उद्देश्य यूनियन के माध्यम से





अपने कार्यों को करवाना होता है। वे यूनियन के कोष का लाभ उठाना और प्रबंधन से अपनी घनिष्ठता बनाने में संलग्न रहते हैं। यूनियन के सदस्यों की मूल समस्याओं के प्रति उनका रवैया लचर और उदासीन होता है।

2. सीमित सदस्यता :

बहुत से कर्मचारी खुद को किसी भी ट्रेड यूनियन के सदस्य के रूप में नामांकित नहीं करते हैं। सदस्यता ज़्यादातर शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित है और वहाँ भी यह संगठन के सभी कर्मचारियों को कवर नहीं करती है। संगठित क्षेत्र में भी, सदस्यता वांछित सीमा तक संतोषजनक नहीं है।

3. राजनीतिक दलों का वर्चस्व :

आज भारत में ट्रेड यूनियनों पर राजनीतिक दलों का दबदबा है। अपने संकीर्ण और स्वार्थी राजनीतिक उद्देश्यों को पूरा करने के लिए, ट्रेड यूनियनों के वास्तविक चरित्र का पालन नहीं किया जा सकता है। राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता ट्रेड यूनियनवाद की वास्तविक भावना पर प्रहार करती है और दुर्भाग्य से कर्मचारी को नुकसान उठाना पड़ता है।

4. ट्रेड यूनियनों का छोटा आकार :

भारत में ट्रेड यूनियनों का आकार संतोषजनक नहीं है, यह काफी छोटा है और इस प्रकार कई संगठनों में नियोक्ताओं के साथ सौदेबाजी करने के लिए आवश्यक ताकत नहीं है। सीमित सदस्यता और छोटे आकार के कारण, उनके पास नियोक्ताओं के उत्पीड़न के खिलाफ अपना संघर्ष जारी रखने के लिए आवश्यक जनशक्ति और वित्तीय ताकत नहीं है।

5. एकता की कमी :

ट्रेड यूनियनों की सदस्यता सीमित होती है और उनका आकार छोटा होता है, साथ ही किसी विशेष औद्योगिक उपक्रम में काम करने वाली यूनियनों की संख्या भी बहुत अधिक होती है। इससे श्रमिकों में विभाजन पैदा होता है, एकता - जो ट्रेड यूनियनवाद का मूल है - गंभीर रूप से प्रभावित होती है।

6. नियोक्ताओं का रवैया :

राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता, छोटे आकार और मौजूदा ट्रेड यूनियनों की एकता की कमी का फायदा उठाकर नियोक्ता श्रमिकों के प्रति उदासीन और अनुचित रवैया अपनाते हैं। वे ट्रेड यूनियनों की स्थापना को "विश्वासघात और कृतघ्नता का कार्य" मानते हैं। श्रमिकों की अज्ञानता, गरीबी, निरक्षरता और कमजोरी का फायदा उठाकर नियोक्ता उनके बीच की एकता को तोड़ने की कोशिश करते हैं।

7. बाहरी नेतृत्व :

ट्रेड यूनियनों का नेतृत्व मज़दूरों के हाथ में नहीं बल्कि बाहरी नेताओं के हाथ में होता है, जिनके लिए मज़दूरों की पीड़ा को महसूस करना बहुत मुश्किल होता है। इनमें से ज़्यादातर नेता पेशेवर लोग होते हैं जैसे वकील और सामाजिक और राजनीतिक नेता, जो मज़दूरों के लिए कुछ नहीं सोचते और न ही उनकी समस्याओं को समझते हैं। यह कहने के लिए किसी स्पष्टीकरण की आवश्यकता नहीं है कि जो व्यक्ति कभी भी उन कठिनाइयों से पीड़ित नहीं हुआ है, जिनसे एक कर्मचारी को गुजरना पड़ता है, वह कर्मचारी की कठिनाई को वांछित सीमा तक नहीं समझ पाएगा। यह भारतीय ट्रेड यूनियनवाद की एक गंभीर कमजोरी है।

8. श्रमिकों की ओर से रुचि की कमी :

कर्मचारी स्वयं ट्रेड यूनियनों की गतिविधियों में सक्रिय रुचि नहीं लेते हैं। यह घटना श्रमिकों के प्रवासी चरित्र, उनकी अशिक्षा, गरीबी आदि के कारण है।

9. साझा लक्ष्य का अभाव :

आज भारत में ट्रेड यूनियनों में एक साझा लक्ष्य की कमी है। चूंकि मज़दूरों पर अलग-अलग राजनीतिक दलों की मज़दूर शाखाएँ नियंत्रण करती हैं, इसलिए मज़दूरों के बीच एकमत होने की उम्मीद नहीं की जा सकती। मज़दूर खुद विभाजित हैं; ट्रेड यूनियनों के बीच प्रतिद्वंद्विता नियोक्ता के प्रति उनकी नफ़रत और विरोध से कहीं ज़्यादा गंभीर है।

कर्मचारी यूनियन अपने उद्देश्य को तब तक पूरा नहीं कर सकते जब तक वह अपने मूल कारण से जुड़ न जाए। अनावशयक बाहरी हस्तक्षेप और कमजोर नेतृत्व के साथ अपने धयेय को प्राप्त करना असंभव है। अपनी कमजोरियों को दूर करके ही कर्मचारी यूनियन अपने मूल उद्देश्य को प्राप्त कर पाएंगे। ■

रातों का सुकून

सच कहूं तो अब रातों में ही सुकून है। जैसे दिन का पूरा शोर, सारी उधेड़बुन, सारे चेहरे, सारे सवाल अंधेरा होते ही अचानक किनारे हो जाते हैं। रात अपने साथ एक अजीब-सी उदासी तो लाती है, लेकिन उसी के साथ उसमें एक शांत-सा ठिकाना भी होता है, जहाँ कोई आवाज़ नहीं, कोई उम्मीद नहीं, कोई जवाबदेही नहीं होती।

रोजमर्रा के जीवन में दिन में बहुत कुछ होता है लोग मिलते हैं, बातें होती हैं, हँसतें हैं, लेकिन भीतर का शोर वहीं का वहीं रहता है। रात आते ही वो शोर धीरे-धीरे कम होने लगता है, जैसे किसी ने भीतर बजती तेज़ आँधी का वॉल्यूम धीरे-धीरे कम कर दिया हो। जब पूरा शहर थककर सो जाता है, तभी अंदर की जागती हुई बेचैनियाँ थोड़ी शांत होती हैं। ऐसा लगता है कि रातें आपको समझती हैं, दिन की तरह आपसे कोई उम्मीद नहीं रखतीं।



श्री राकेश रौशन
लेखापरीक्षक

रातों में मैं और आप अपने असली रूप में होते हैं जहां न मज़बूत बनने की ज़रूरत, न खुश दिखने की, न किसी को कुछ साबित करने की। अंधेरे में भी एक भाषा होती है बहुत कोमल, बहुत धीमी, लेकिन पूरी तरह सच्ची।

ये रातें आपको एक छोटी-सी राहत, एक ठहराव, एक मौका देती हैं कि मैं और आप फिर से अपने भीतर लौट सकें और बिना किसी शोर के खुद को समझ सकें।

कभी-कभी लगता है कि शायद ये रातें ही आपकी सबसे ईमानदार रिश्तेदार हैं। दिन चमकदार है, लेकिन झूठा, रात अंधेरी है, लेकिन साफ़। रातें डराती नहीं वे अपनी तरह आपको संभालती हैं।

बाहर की दुनिया भले बड़ी है, पर सुकून सिर्फ़ यही हैं- रातें। ■

पढ़ना क्यों हैं जरूरी !

इस दूनिया में अगर सर्वाइव करना है तो बिना पैसों के हम एक कदम भी नहीं चल सकते। लेकिन हमारा मकसद क्या सिर्फ पैसा कमाना ही है? क्योंकि पैसा तो एक अनपढ़ इंसान भी कमा ले रहा है तो फिर पढ़ाई करना क्यों जरुरी है आइए समझते हैं-

पढ़ाई के बाद पैसा सबसे ज़रूरी है, कोई शक ही नहीं है, इस पर कोई सवाल ही नहीं बनता। लेकिन पढ़ाई का मतलब सिर्फ़ डिग्री लेना, नौकरी पकड़ना या बैंक बैलेंस बढ़ाने तक सीमित नहीं है। पढ़ाई हमारे दिमाग़ की खिड़कियाँ खोलती है। ऐसी खिड़कियाँ जिनको हमारा पूरा ईको-सिस्टम बंद ही रखना चाहता है। पढ़ाई ये उम्मीद जगाती है कि कभी हमें समझ आएगा कि हम बस "हम" v/s "वे" करने के लिए नहीं पैदा हुए हैं।

ये सिखाती है कि शासक चाहे कितना भी बड़ा और शक्तिशाली क्यों न हो, इंसान ही है, उसके फ़ैसले भी ग़लत हो सकते हैं, उससे भी सवाल किए जा सकते हैं, तर्क और बहस की जा सकती है।

पढ़ना सिविक सेंस जगाता है। ये समझ आता है कि सड़क पर गंदगी फैलाना, कूड़ा फेंकना, लाइन तोड़ना, या किसी की आवाज़ दबाना सिर्फ़ 'छोटी सी बात' नहीं, बल्कि समाज के साथ विश्वासघात है। ये अच्छे-बुरे की तमीज़ सिखाती है न कि सिर्फ़ किताबी नैतिकता, बल्कि वह नैतिकता जो रोज़ की ज़िंदगी में टेस्ट होती है। पढ़ाई यही हिम्मत देती है। बराबरी पर खड़ा होने के मौक़े देती है। सवाल पूछने के, न कहने के और सही के लिए लड़ने की। आज के ज़माने में अनपढ़ इंसान मशीन बन सकता है, प्यादा बन सकता है, लेकिन जी नहीं सकता।

पढ़ें, इसलिए कि हमारी आँखें खुली रहें, दिमाग जगा रहे और दिल मज़बूत रहे कि हम सिर्फ़ सर्वाइव करने के लिए धरती पर नहीं आए, बेहतर ज़िंदगी जीने, समझने और एक सकारात्मक बदलाव लाने भी आए हैं।

लोगों को पढ़ा-लिखा इंसान चुभता है पता है क्यों- क्योंकि पढ़ाई दिमाग को इतना विस्तृत कर देती है कि छोटी-छोटी चीज़ें अब छोटी नहीं लगने लगतीं। एक ग़लत फैसला, एक अन्याय, एक झूठ, ये सब सिर्फ़ 'होता है, चलता है' वाली बात नही रह जाती है। ये चुभते हैं, क्योंकि अब उसे समझ आ गई है कि हर चीज़ का एक गहरा असर होता है- हम पर, तुम पर, समाज पर, आने वाली पीढ़ी पर। आप अकेले नहीं हो, आपकी सड़क, आपका शहर, आपका देश, ये सब आपके साथ जुड़े हैं। अगर हम चुप रहें, तो वह चुप्पी भी एक फ़ैसला होती है। अगर हमने आवाज़ नहीं उठाई, तो वह ख़ामोशी भी एक हिस्सेदारी है। पढ़ाई अच्छे-बुरे की सीमा को धुंधला नहीं करती बल्कि उसे और साफ़ करती है। किताबें, विचार, ये सब मिलकर एक आइना बन जाते हैं, जिसमें हम और आप ख़ुद को देखते हो। पढ़ाई जिम्मेदारों से सवाल बार-बार पुछवाती है, और जवाब की ताक़त भी देती है। ज़िम्मेदारों से सवाल करना कोई बग़ावत नहीं, ज़िम्मेदारी है, और अगर जवाब संतोषजनक नहीं है, तो बदलाव की माँग।

ग़रीबों के लिए, शोषितों के लिए, निचले तबकों के लिए तो पढ़ना और भी ज़रूरी है। क्योंकि उनके लिए समाज की मुख्य धारा में आने का यही एकमात्र हथियार है। पढ़ाई को किसी भी क़ीमत पर सेक्रिफाइस नहीं किया जा सकता है। हर हाल में पढ़ना है, फिर हमें दिन, घण्टे, महीने की कितनी ही कमाई का गणित पकड़ाया जाए कि पढ़ाई-लिखाई से क्या ही हो जाएगा। ■

सीतामढ़ी : माँ सीता की जन्मभूमि



श्री रोहित साह
कनिष्ठ अनुवादक

"था सदाचार सत्कार जहाँ, अनुरक्ति जहाँ पर सस्ती थी।
कंगाली जहाँ न बसती थी ऐसी विदेह की बस्ती थी।।"

सीता मड़ई, सीतामही फिर सीतामढ़ी के नाम से विश्वविख्यात यह पौराणिक स्थल रामायणकाल से संबंधित है जो जगतजननी माँ सीता के जन्मस्थान के रूप में प्रचलित है। ऐसी मान्यता है कि त्रेता युग में राजा जनक के राज्य जनकपुर में एक भीषण अकाल पड़ा। लोग बहुत परेशान थे। यह देखकर उनके दरबार के विद्वानों ने सलाह दी कि अगर राजा अपने हाथों से हल चलाएंगे तो अकाल का निराकरण हो सकता है।

पीड़ित अकाल से प्रजा देख, राजा हो गया किसान जहाँ।
किस भाँति वहाँ का वर्णन हो, प्रकटी शोभा की खान जहाँ।।

प्रजा के कल्याण हेतु राजा जनक ने किसान बनकर हल चलाना शुरू किया साथ में सगे-संबंधियों के साथ हल चलाते हुए जब वे सीतामढ़ी पहुँचे तो हल अचानक किसी कठोर वस्तु(बक्से) में फंस गया। जब उस बक्से को खोलकर देखा तो उसमें एक बालिका थी। बालिका के उत्पन्न होते ही मुसलाधार बारिश होने लगी। राजा ने उस बालिका को लेकर एक पास के मड़ई में छुप गए। यही मड़ई सीतामड़ई के नाम से प्रसिद्ध हुआ जो कालांतर में सीतामढ़ी के नाम से जाना जाता है। हल के अग्रभाग से उत्पन्न होने के कारण बालिका का नाम सीता रखा गया। वस्तुतः हल के अग्रभाग को सीता कहा जाता है। वास्तव में यह स्थान पुनौरा के नाम से प्रचलित है। जो सीतामढ़ी रेलवे स्टेशन से 3.5 किलोमीटर पश्चिम-दक्षिण में अवस्थित है। यहाँ एक पोखरा भी है जहाँ विभिन्न आयोजनों पर मेला का भी आयोजन किया जाता है। इसके अलावा सीतामढ़ी शहर के पश्चिमी छोर पर जानकी स्थान मंदिर अवस्थित है। इसकी स्थापना 1599 ई. में की गई थी। इसके दक्षिण कोने पर एक पोखर है जिसे उर्विजा कुंड के नाम से जाना जाता है। इसी कुंड की खुदाई के समय एक मूर्ति मिली थी जिसे जानकी मंदिर में स्थापित कर पूजा की जाती है। यह शहर प्राचीन लक्ष्मणा नदी के किनारे बसा हुआ है जिसे लखनदेई के नाम से भी जाना जाता है।

सीतामढ़ी बिहार की राजधानी पटना से लगभग 125 किलोमीटर उत्तर में स्थित है। इसके उत्तर में नेपाल, दक्षिण में मुज़फ्फरपुर तथा दरभंगा, पश्चिम में पूर्वी चंपारण तथा पूर्व में मधुबनी जिला है। सीतामढ़ी नेपाल के साथ 100 किलोमीटर की अंतर्राष्ट्रीय सीमा साझा करती है। 1908 ई. में यह मुज़फ्फरपुर जिला का एक अंग हुआ करता था। 3 दिसंबर 1972 को एक स्वतंत्र जिला के रूप घोषित किया गया। यहाँ के प्रथम सांसद आचार्य जे.बी.कृपलानी थे। सीतामढ़ी से कटकर 1993 ई. में एक अन्य जिला शिवहर की स्थापना की गई।

यहाँ के लोग मगही, मैथिली तथा भोजपुरी भाषा बोलते है। यहाँ धान, गेहूँ, मक्का, गन्ना, दलहन, तिलहन, खैनी आदि की खेती किया जाता



है। सीतामढ़ी से 8 किलोमीटर पश्चिम रीगा चीनी मिल है। यहाँ के लोगों के लिए आजीविका के साधन के रूप में है। चीनी मिल को आर्थिक नुकसान के कारण बंद कर दिया गया था परंतु वर्तमान सरकार के प्रयास से इसे पुनः शुरू करने के लिए कार्य बड़ी तेजी से हो रहा है। आशा है आगामी वर्ष में यहाँ फिर से चीनी का उत्पादन कार्य शुरु हो जाएगा। जिससे लोगों में रोजगार के साधन उपलब्ध हो सकेंगे।

मुख्य पर्यटन स्थल

जानकी स्थान मंदिर :

सीतामढ़ी रेलवे स्टेशन से 2 किलोमीटर की दूरी पर बने जानकी मंदिर में स्थापित श्रीराम, माँ सीता लक्ष्मण के साथ श्री हनुमान जी की भी मूर्ति है। यह सीतामढ़ी नगर के पश्चिमी छोर पर स्थित है। जानकी मंदिर के नाम से प्रसिद्ध यह पूजा स्थल सनातन संस्कृति में आस्था रखने वालों के लिए अति पवित्र है। मंदिर प्रांगण में ही एक पोखर है जिसे उर्विजा कुंड के नाम से जाना जाता है। इस पोखर के बीच में एक मंदिर है।

पुनौरा धाम :

यह स्थल पौराणिक काल में पुंडरिक ऋषि के आश्रम के रूप में विख्यात था। कुछ लोगों का यह भी मत है कि सीतामढ़ी से 5 किलोमीटर पश्चिम स्थित पुनौरा में ही देवी सीता का जन्म हुआ था। मिथिला नरेश महाराजा जनक ने इंद्रदेव को खुश करने के लिए अपने हाथों से यहाँ हल चलाया था। इसी दौरान एक मृदापात्र में देवी सीता बालिका रूप में उन्हें मिली। मंदिर के अलावा एक कुंड भी है।

हलेश्वर स्थान :

सीतामढ़ी से 3 किलोमीटर उत्तर-पूर्व में इस स्थान पर राजा जनक ने पुत्रेष्टि यज्ञ के पश्चात भगवान शिव का मंदिर बनवाया था जो हलेश्वर स्थान के नाम से प्रसिद्ध है।

बगही धाम :

यह मठ 10वीं सदी का है। यह मठ अपनी सुंदर वास्तुकला और प्राचीन मूर्तियों के लिए जाना जाता है।

देवकुली धाम : एक मान्यतानुसार पाण्डवों की पत्नी द्रौपदी का जन्म इसी स्थान पर हुआ था। यह सीतामढ़ी से लगभग 20 किलोमीटर पश्चिम बागमती नदी के तट पर स्थित है जोकि वर्तमान शिवहर जिला में स्थित है। यहाँ प्राचीन शिव मंदिर है। विभिन्न अवसरों पर यहाँ मेला का आयोजन भी किया जाता है।

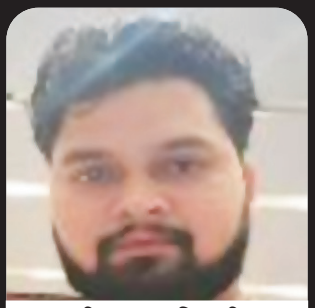
शैक्षणिक संस्थान :

सीतामढ़ी सामान्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए पटना के बाद बिहार का उत्कृष्ट शिक्षा का केंद्र है। यहाँ से प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में विद्यार्थी सफल होकर विभिन्न क्षेत्रों में सेवा दे रहे है। यहाँ पर चिकित्सा महाविद्यालय एवं इंजिनीयरिंग महाविद्यालय का भी निर्माण कार्य प्रगति पर है।

सीतामढ़ी में विश्व स्तर के सुविधा से युक्त रेलवे स्टेशन का निर्माण प्रस्तावित है जिससे पर्यटकों के लिए माँ जानकी की जन्मस्थान का दर्शन सुलभ हो जाएगा। यहाँ के बालूशाही बहुत ही प्रसिद्ध है जो सीतामढ़ी की शान का प्रतीक है। ■



स्वामी जी



श्री शशांक तिवारी
कनिष्ठ अनुवादक

स्वामी विवेकानंद भारत के महान संत, विचारक, दार्शनिक और राष्ट्रनिर्माता थे। उनका जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था। उनका मूल नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। स्वामी विवेकानंद ने अपने जीवन और कार्यों के माध्यम से न केवल भारत को बल्कि पूरे विश्व को आध्यात्मिक, सामाजिक और नैतिक दिशा प्रदान की। उन्होंने भारतीय संस्कृति, वेदांत दर्शन और मानव सेवा को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित किया। उनके द्वारा किए गए कार्य आज भी समाज के लिए प्रेरणास्रोत हैं।

वेदांत और भारतीय दर्शन का प्रचार

स्वामी विवेकानंद का सबसे महत्वपूर्ण कार्य वेदांत दर्शन का प्रचार-प्रसार था। वे मानते थे कि वेदांत केवल धर्म नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला है। उन्होंने अद्वैत वेदांत को सरल भाषा में लोगों तक पहुँचाया और बताया कि हर जीव में ईश्वर का अंश विद्यमान है। उनका प्रसिद्ध कथन था—

"उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।"

यह विचार आज भी युवाओं को आत्मविश्वास और कर्मठता की प्रेरणा देता है।





शिकागो धर्म सम्मेलन में ऐतिहासिक भाषण

1893 में अमेरिका के शिकागो शहर में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद ने भारत का प्रतिनिधित्व किया। उनका भाषण "सिस्टर्स एंड ब्रदर्स ऑफ अमेरिका" से आरंभ हुआ, जिसे सुनकर पूरा सभागार तालियों से गूँज उठा। इस भाषण के माध्यम से उन्होंने विश्व को भारतीय संस्कृति, सहिष्णुता, धार्मिक एकता और मानवता का संदेश दिया। यह भारत के लिए गर्व का क्षण था और इससे भारत की छवि एक महान आध्यात्मिक राष्ट्र के रूप में उभरी।

रामकृष्ण मिशन की स्थापना

1897 में स्वामी विवेकानंद ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। इसका उद्देश्य था—

"आत्मनो मोक्षार्थं जगद्धिताय च"

अर्थात् स्वयं की मुक्ति और विश्व के कल्याण के लिए कार्य करना। रामकृष्ण मिशन के अंतर्गत शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा, आपदा राहत, महिला सशक्तिकरण और गरीबों की सेवा जैसे अनेक कार्य किए गए। आज भी यह मिशन भारत और विदेशों में मानव सेवा के कार्यों में अग्रणी है।

शिक्षा के क्षेत्र में योगदान

स्वामी विवेकानंद आधुनिक और मूल्य-आधारित शिक्षा के समर्थक थे। वे ऐसी शिक्षा चाहते थे जो चरित्र निर्माण करे, आत्मविश्वास बढ़ाए और व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाए। उनका मानना था कि शिक्षा वह है जिससे मनुष्य में निहित पूर्णता प्रकट हो। उन्होंने युवाओं को बलवान, निर्भीक और चरित्रवान बनने का संदेश दिया। उनके विचार आज की शिक्षा प्रणाली के लिए भी अत्यंत प्रासंगिक हैं।

युवाओं के प्रेरणास्रोत

स्वामी विवेकानंद युवाओं को राष्ट्र की रीढ़ मानते थे। उन्होंने युवाओं को आत्मविश्वास, साहस और देशभक्ति की भावना से भरने का कार्य किया। वे कहते थे कि एक मुट्ठी भर चरित्रवान युवा पूरे राष्ट्र का भाग्य बदल सकते हैं। उनके विचारों के कारण ही भारत सरकार ने उनके जन्मदिवस 12 जनवरी को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया।

सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध आवाज

स्वामी विवेकानंद ने जातिवाद, छुआछूत, अंधविश्वास और सामाजिक असमानता का खुलकर विरोध किया। वे मानते थे कि गरीबों और शोषितों की सेवा ही सच्ची ईश्वर-सेवा है। उन्होंने समाज के कमजोर वर्गों के उत्थान के लिए कार्य करने का संदेश दिया और लोगों को मानवता का पाठ पढ़ाया।

नारी सम्मान और सशक्तिकरण

स्वामी विवेकानंद नारी शक्ति के प्रबल समर्थक थे। वे मानते थे कि जिस समाज में महिलाओं का सम्मान नहीं होता, वह कभी प्रगति नहीं कर सकता। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा और स्वतंत्रता पर बल दिया और उन्हें समाज के उत्थान का आधार बताया। उनके विचार आज भी महिला सशक्तिकरण के लिए प्रेरणा देते हैं।

विश्व बंधुत्व और मानवता का संदेश

स्वामी विवेकानंद ने संपूर्ण विश्व को एक परिवार मानने की भावना को बढ़ावा दिया। वे सभी धर्मों को समान मानते थे और धार्मिक सहिष्णुता के समर्थक थे। उनका जीवन और कार्य यह सिखाता है कि प्रेम, सेवा और करुणा ही मानव जीवन के सर्वोच्च मूल्य हैं।

स्वामी विवेकानंद का जीवन त्याग, सेवा और आत्मज्ञान का प्रतीक था। उन्होंने अपने विचारों और कार्यों से समाज को नई दिशा दी। उनके द्वारा किए गए अच्छे कार्य आज भी मानवता के लिए प्रकाश स्तंभ हैं। यदि हम उनके विचारों को अपने जीवन में अपनाएँ, तो न केवल हमारा व्यक्तित्व निखरेगा बल्कि समाज और राष्ट्र भी उन्नति की ओर अग्रसर होगा। स्वामी विवेकानंद सचमुच भारत के गौरव और विश्व के महान आध्यात्मिक पथप्रदर्शक थे।

हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ



हिंदी कार्यशाला की झलकियाँ



राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक की झलकियाँ



सेवानिवृत्ती

क्र.सं	नाम	पदनाम	सेवानिवृत्ती की तिथि
1	श्री नामदेव एन. सुरुसे	एमटीएस	11/30/2025
2	श्री अरविंद कुमार जमुना सिंह	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31/01/2026
3	श्री उमेश आर. पाटिल	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31/01/2026
4	श्रीमती लता विजयकुमार	वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	31.03.2026



अखिल भारतीय सिविल सेवा फुटबॉल टूर्नामेंट

हमारे निम्नलिखित खिलाड़ियों ने तृतीय स्थान प्राप्त कर लगातार दूसरे वर्ष ट्रॉफी अपने नाम की है:

- 🏆 **श्री नचिकेत पालव**
  लेक्षापरीक्षक/ आ.प्रा.ले.प
- 🏆 **श्री अफ़ज़ाल अख्तर**
  लिपिक-टंकक/ आ.प्रा.ले.प
- 🏆 **श्री जंग बहादुर सिंह**
  लिपिक-टंकक/ प्रशासन






POORVI